PA.ONE
GS Research Foundation

Update on –

01 Aug, 2024

UTTAR PRADESH(4.0)

उत्तर प्रदेश

NAME-.....

PET | UP-TET | S-TET

POLICE | UPSSC EXAM

C-SAT | SSC-GD | LEKHPAL

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

विषय सूची

1. उत्तर प्रदेश एक दृष्टि
2. उत्तर प्रदेश का इतिहास
3. उत्तर प्रदेश का भूगोल
4. प्रमुख नदियां
5. नदियों किनारे बसे प्रमुख शहर
6. एक जिला एक उत्पाद वाले स्थान
7. मृदा एवं कृषि
8. वानिकी व जीव
9. खनिज संसाधन
10. ऊर्जा उत्पादन
11. परिवहन
12. प्रमुख शिक्षण संस्थान
13. प्रमुख संस्थान
14. कला एवं संस्कृति सम्बन्धी संस्थान
15. पत्रकारिता
16. चित्रकला, मूर्तिकला, लोककला, नृत्य एवं संगीत
17. राज्य में स्थित प्रमुख धरोहर
18. जनजाति
19. आर्थिक तत्व

उत्तर प्रदेश

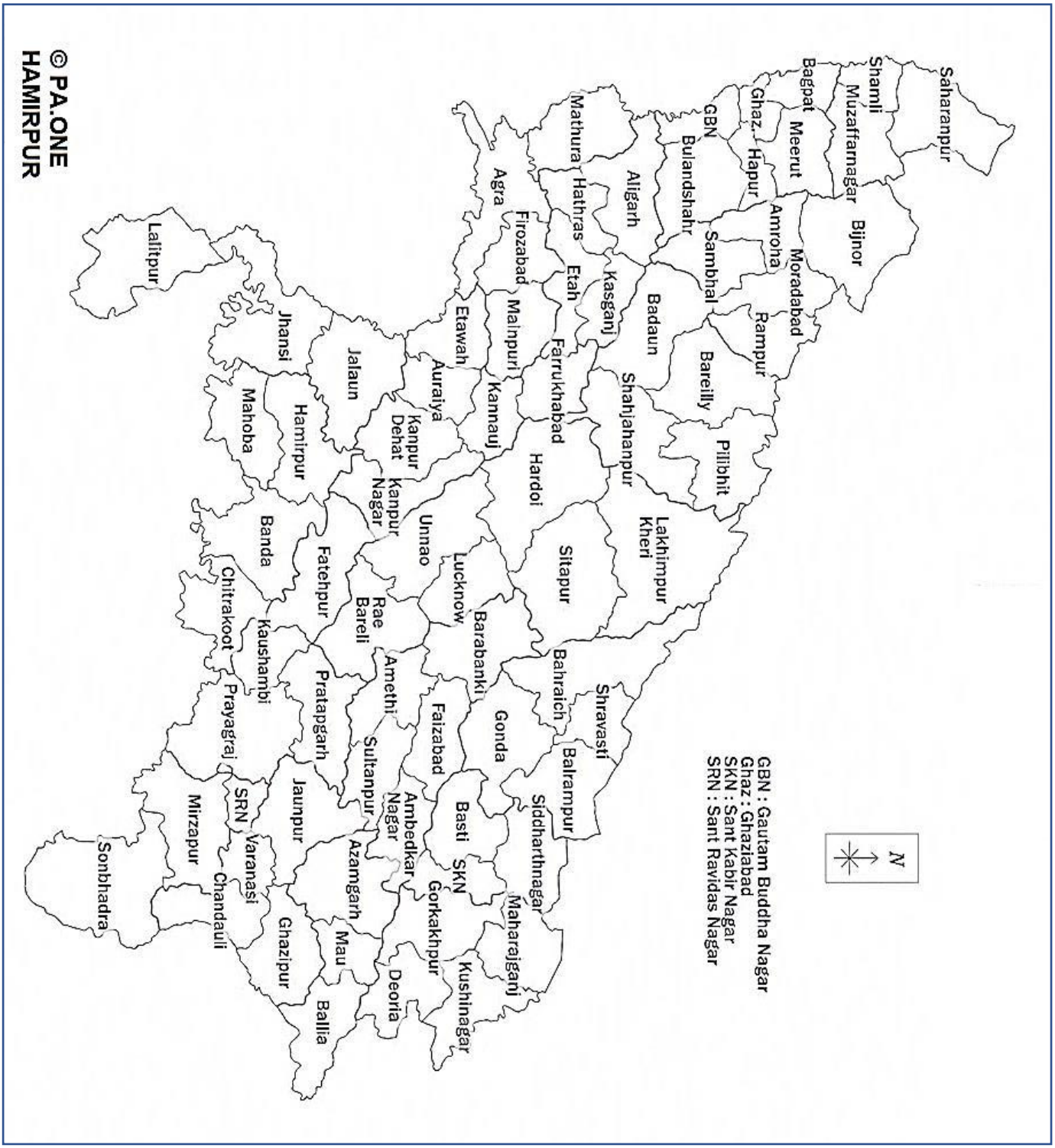
Saharanpur
Shamli
Muzaffarnagar
Bijnor
Baghpat
Meerut
Moradabad
Ghaz.
Hapur
Amroha
GBN
Bulandshahr
Sambhal
Rampur
Aligarh
Badaun
Bareilly
Mathura
Hathras
Kasganj
Pilibhit
Agra
Etah
Shahjahanpur
Firozabad
Farrukhabad
Lakhimpur Kheri
Etawah
Mainpuri
Hardoi
Auraiya
Kannauj
Sitapur
Jalaun
Kanpur Dehat
Unnao
Jhansi
Kanpur Nagar
Lucknow
Hamirpur
Rae Bareli
Mahoba
Fatehpur
Banda
Barabanki
Bahraich
Shravasti
Chitrakoot
Kaushambi
Pratapgarh
Amethi
Gonda
Balrampur
Prayagraj
Faizabad
Sultanpur
Siddharthnagar
Lalitpur
Jaunpur
Basti
Ambedkar Nagar
SRN
Maharajganj
Varanasi
SKN
Azamgarh
Gorakhpur
Mirzapur
Chandauli
Mau
Kushinagar
Ghazipur
Deoria
Sonbhadra
Ballia
N
GBN : Gautam Buddha Nagar
Ghaz : Ghaziabad
SKN : Sant Kabir Nagar
SRN : Sant Ravidas Nagar
© PA.ONE
HAMIRPUR

उत्तर प्रदेश

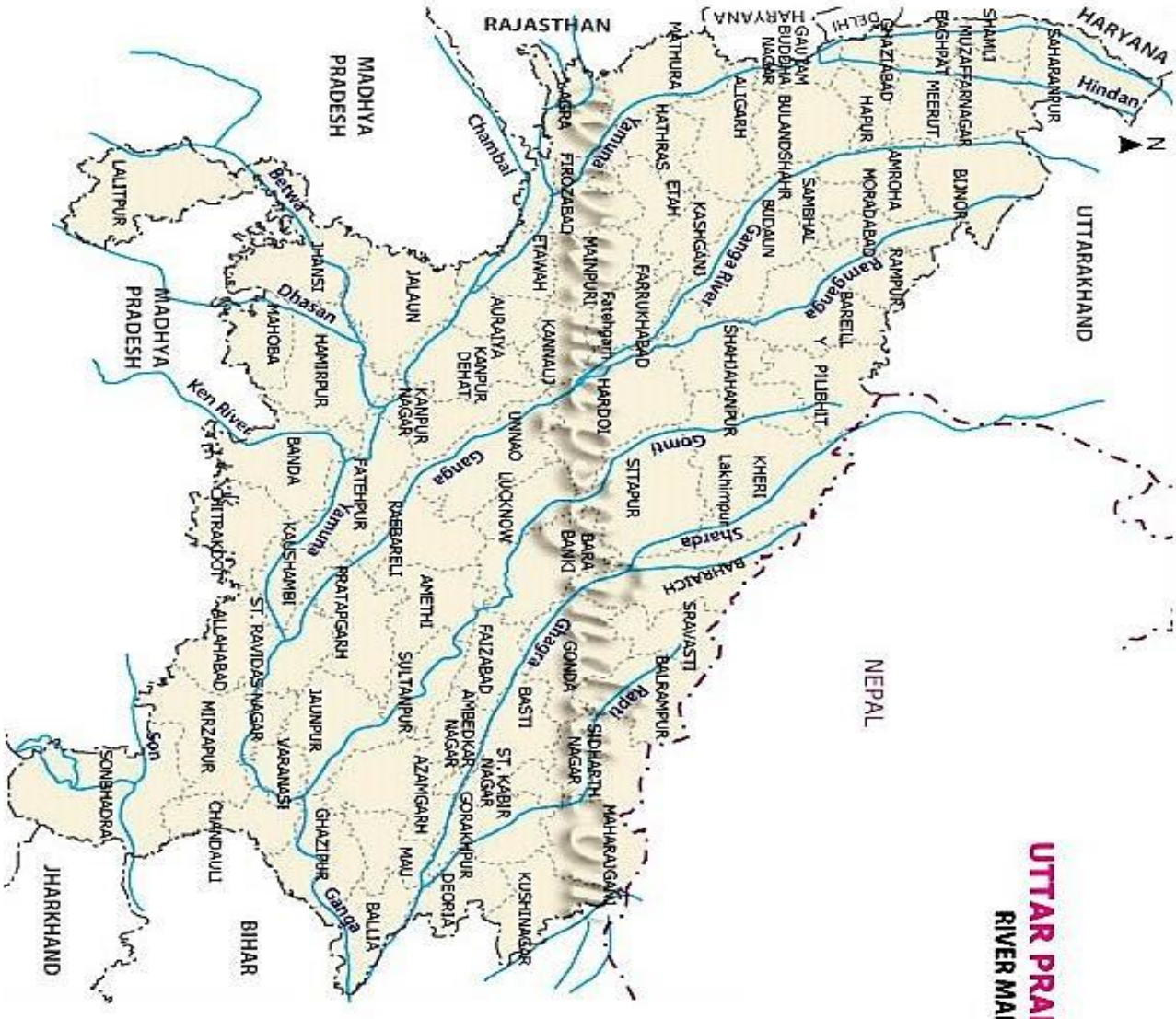
UTTAR PRADESH
RIVER MAP
HARYANA
Hindan
SAHARANPUR
SHAMLI
MUZAFFARNAGAR
BAGHPAT
MEERUT
GHAZIABAD
DELHI
HARYANA
GAUTAM BUDDHA NAGAR
BULANDSHAHR
ALIGARH
MATHURA
HATHRAS
ETAH
KASHGANJ
BIJNOR
AMROHA
HAPUR
MORADABAD
SAMBHAL
BUDAUN
RAMPUR
BAREILLY
PILIBHIT
SHAHJAHANPUR
KHERI
Lakhimpur
SITAPUR
BARAICH
SRAVASTI
BALRAMPUR
SIDHARTH NAGAR
MAHARAJGANJ
KUSHINAGAR
DEORIA
GORAKHPUR
ST. KABIR NAGAR
BASTI
GONDA
BARA BANKI
LUCKNOW
UNNAO
RAEBARELI
SULTANPUR
AMBEDKAR NAGAR
AZAMGARH
MAU
BALLIA
GHAZIPUR
JAUNPUR
ST. RAVIDAS NAGAR
VARANASI
MIRZAPUR
CHANDAULI
ALLAHABAD
CHITRAKOOT
KAUSHAMBI
PRATAPGARH
FATEHPUR
BANDA
KANPUR NAGAR
KANPUR DEHAT
AURAIYA
KANNAUJ
HARDOI
Fatehpur
MAINPURI
FARRUKHABAD
ETAWAH
FIROZABAD
AGRA
JALAUN
HAMIRPUR
MAHOBA
JHANSI
LALITPUR
SONBHADRA
RAJASTHAN
MADHYA PRADESH
MADHYA PRADESH
JHARKHAND
BIHAR
UTTARAKHAND
NEPAL
N
Chambal
Yamuna
Ganga River
Ramganga
Gomti
Sharda
Rapti
Ghagra
Ganga
Ganga
Yamuna
Dhasan
Betwa
Ken River
Son

उत्तर प्रदेश

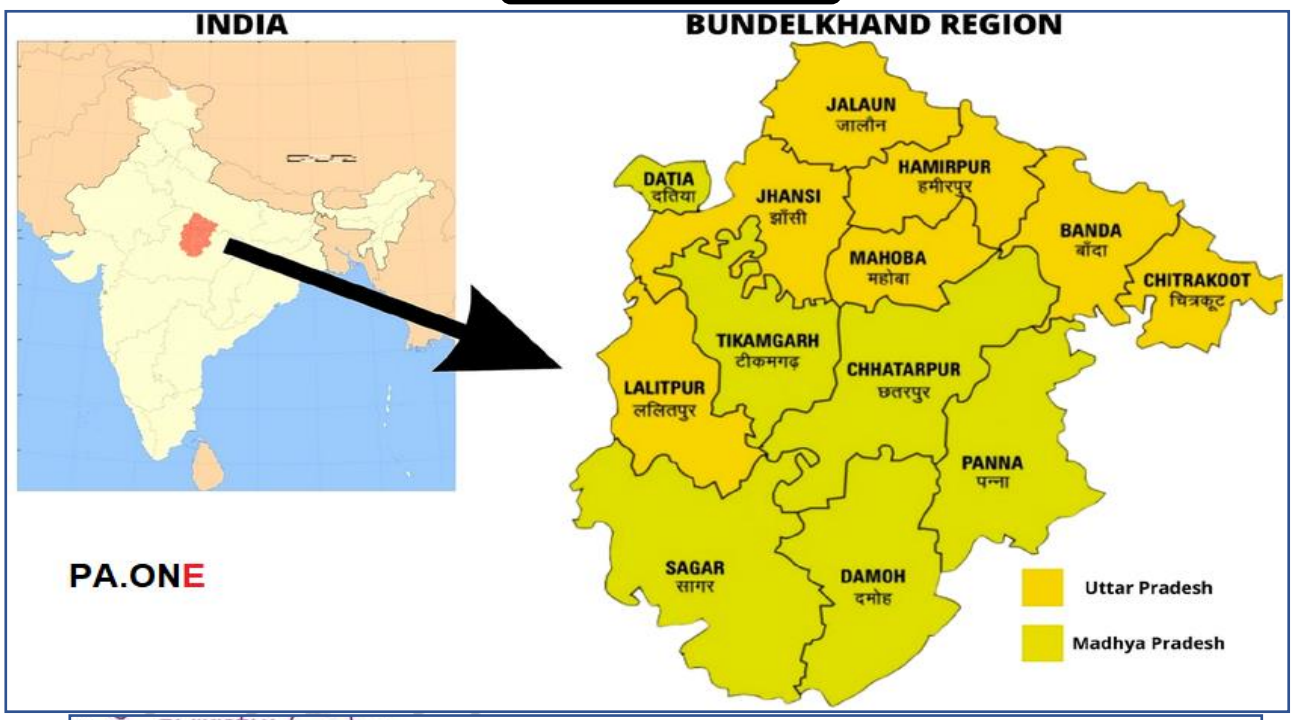
INDIA
BUNDELKHAND REGION
JALAUN
जालौन
DATIA
दतिया
JHANSI
झाँसी
HAMIRPUR
हमीरपुर
BANDA
बाँदा
MAHOBA
महोबा
CHITRAKOOT
चित्रकूट
TIKAMGARH
टीकमगढ़
CHHATARPUR
छतरपुर
LALITPUR
ललितपुर
PANNA
पन्ना
SAGAR
सागर
DAMOH
दमोह
Uttar Pradesh
Madhya Pradesh
PA.ONE

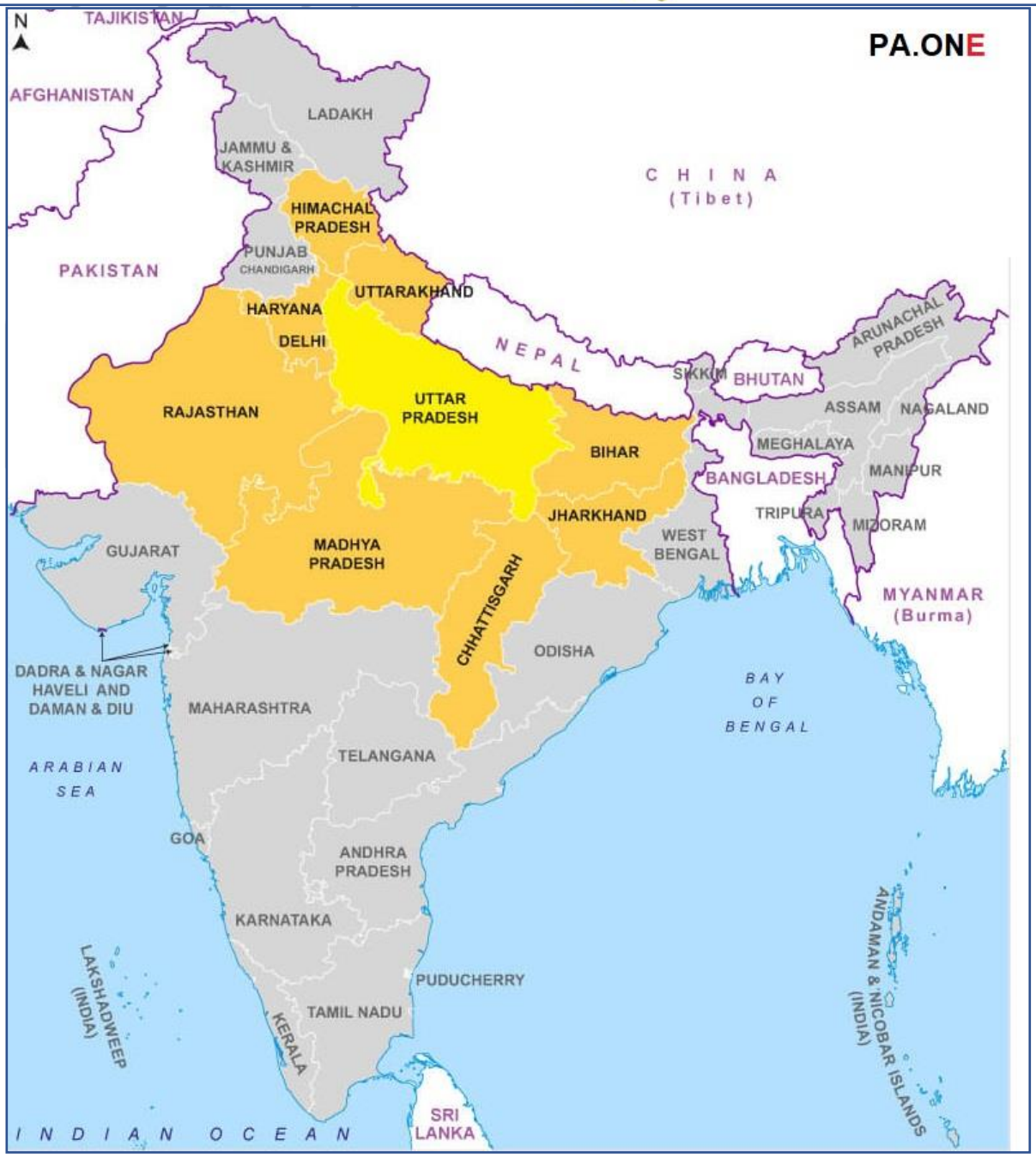
N
PA.ONE
TAJIKISTAN
AFGHANISTAN
LADAKH
JAMMU & KASHMIR
CHINA (Tibet)
HIMACHAL PRADESH
PUNJAB
CHANDIGARH
PAKISTAN
UTTARAKHAND
HARYANA
DELHI
NEPAL
SIKKIM
BHUTAN
ARUNACHAL PRADESH
ASSAM
NAGALAND
RAJASTHAN
UTTAR PRADESH
BIHAR
MEGHALAYA
BANGLADESH
MANIPUR
JHARKHAND
TRIPURA
MIZORAM
WEST BENGAL
GUJARAT
MADHYA PRADESH
CHHATTISGARH
MYANMAR (Burma)
ODISHA
DADRA & NAGAR HAVELI AND DAMAN & DIU
MAHARASHTRA
BAY OF BENGAL
ARABIAN SEA
TELANGANA
GOA
ANDHRA PRADESH
KARNATAKA
LAKSHADWEEP (INDIA)
PUDUCHERRY
TAMIL NADU
KERALA
ANDAMAN & NICOBAR ISLANDS (INDIA)
INDIAN OCEAN
SRI LANKA

1. उत्तर प्रदेश एक दृष्टि

- उत्तर वैदिक काल में उत्तर प्रदेश को ब्रह्मर्षि देश या मध्य देश कहते थे।
- स्थापन दिवस : 1 नवम्बर, 1956 को
- उत्तर प्रदेश दिवस : 24 जनवरी (पहली बार 2018 को मनाया गया)
- उत्तर प्रदेश नाम से गठन : 24 जनवरी, 1950
- प्रदेश का नाम : जून, 1836 से उत्तर पश्चिम प्रान्त
  : 1877 से आगरा एवं अवध का संयुक्त प्रान्त
  : 1937 से केवल संयुक्त प्रान्त
  : 24 जनवरी, 1950 से उ0प्र0
- राजधानी : 1836 से आगरा
  : 1858 से इलाहाबाद
  : 1921 से लखनऊ (आंशिक)
  : 1935 से लखनऊ (पूर्णतः) 24 जन, 1950 को
- राज्य का विभाजन : 9 नवम्बर 2000 (13 जिलो को काटकर उत्तराखण्ड बना)
- राजकीय भाषा : 1947 से हिन्दी । तथा 1989 से उर्दू ॥
- राजकीय पशु : बारहसिंगा (दलदल का मृग)
- राजकीय पक्षी : सारस अथवा क्रौंच
- राजकीय वृक्ष : अशोक
- राजकीय पुष्प : पलाश या टेंसू (4 जन. 2011 से)
- राजकीय खेल : हॉकी
- राजकीय चिह्न : 1 वृत्त में 2 मछली, 1 तीर-धनुष, (यह चिन्ह 1938 में स्वीकृत हुआ)
- राजकीय चिह्न की मछली : चिताला मछली
- मछली चिह्न कहां से लिया : लखनऊ के रूमी दरवाजा (आसफउदौला ने 1784 मे बनवाया)
- राज्य विधानमण्डल : द्विसदनात्मक
- राज्य विधानसभा का प्रथम गठन : 1937
- विधान सभा सदस्य : 403
- विधान परिषद सदस्य : 99
- लोकसभा सदस्य : 80
- राज्यसभा सदस्य : 31
- उच्च न्यायालय : इलाहाबाद (खण्डपीठ -लखनऊ)
- उच्च न्यायालय स्थापित : 1866
- क्षेत्रफल : 2,40,928 वर्ग किमी. (भारत का 7.33%)
- पूर्व से पश्चिम की लम्बाई : 650 किमी.
- दक्षिण से उत्तर की चौड़ाई : 240 किमी.
- समीपवर्ती प्रदेश : 9 (1 केन्द्रशासित दिल्ली + 8 राज्य उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, बिहार)
- सीमावर्ती देश : नेपाल
- क्षेत्रफल में स्थान : चौथा (राजस्थान, मध्य प्रदेश तथा महाराष्ट्र के बाद)
- राष्ट्रपति शासन : 10 बार

उत्तर प्रदेश

- मण्डल : 18
- जिले : 75
- कटिबन्ध : उपोष्ण कटिबन्ध (न अधिक गर्म, न अधिक ठण्डा)
- जलवायु : उष्ण कटिबन्धीय मानसूनी जलवायु
- सर्वोच्च खेल पुरस्कार : लक्ष्मण पुरस्कार
- सर्वाधिक क्षेत्रफल वाला जिला : लखीमपुरखीरी (7680 वर्ग किमी.)
- सर्वाधिक क्षेत्रफल वाले जिले : लखीमपुरखीरी > सोनभद्र > हरदोई >
- निम्नतम क्षेत्रफल वाला जिला : हापुड़ (660 वर्ग किमी.)
- निम्नतम क्षेत्रफल वाले जिले : हापुड़ < सन्त रविदास नगर (भदोही) <
- प्रदेश में सर्वाधिक नम भूमि (वेटलैण्ड) वाला जिला : सोनभद्र (5.08%)
- सबसे ज्यादा वायु अपरदन वाला जिला : मथुरा, आगरा
- सर्वाधिक बंजर भूमि वाला जिला : झांसी
- प्रदेश का सबसे पूर्वी जिला : बलिया
- प्रदेश का सबसे पश्चिमी जिला : शामली
- प्रदेश का सबसे उत्तरी जिला : सहारनपुर
- प्रदेश का सबसे दक्षिणी जिला : सोनभद्र
- प्रदेश में सर्वाधिक वर्षा वाला जिला : सोनभद्र
- प्रदेश में सबसे कम वर्षा वाला जिला : अलीगढ़
- उत्तराखण्ड से सटे जिले : 7 (सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, बिजनौर, मुरादाबाद, रामपुर, बरेली और पीलीभीत)
- हरियाणा से सटे जिले : 6 (सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, बागपत, गौतमबुद्ध नगर, अलीगढ़ और मथुरा)
- दिल्ली से सटे जिले : 2 (गौतमबुद्ध नगर, गाजियाबाद)
- राजस्थान से सटे जिले : 2 (आगरा, मथुरा)
- मध्य प्रदेश से सटे जिले : 12 (आगरा, इटावा, औरैया जालौन, झाँसी, ललितपुर, महोबा, बाँदा, चित्रकूट, इलाहाबाद, मिर्जापुर और सोनभद्र)
- बिहार से सटे जिले : 7 (सोनभद्र, चन्दौली, गाजीपुर, बलिया, देवरिया, कुशीनगर, महाराजगंज)
- झारखण्ड से सटे जिले : 1 (सोनभद्र)
- छत्तीसगढ़ से सटे जिले : 1 (सोनभद्र)
- सहारनपुर से सटे राज्यों की संख्या : 3 (हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड)
- सोनभद्र जिले से सटे राज्यों की संख्या : 4 (बिहार, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश)
- नेपाल से सटे जिले : 7 (पीलीभीत, लखीमपुरखीरी, बहराइच, श्रावस्ती बलरामपुर, सिद्धार्थनगर, महाराजगंज)
- केवल नेपाल से सटे जिले : 5 (लखीमपुरखीरी, बहराइच, श्रावस्ती बलरामपुर, सिद्धार्थनगर)
- अन्तर्राष्ट्रीय सीमा साझा करने वाले जिले : 7 (पीलीभीत, लखीमपुरखीरी, बहराइच, श्रावस्ती बलरामपुर, सिद्धार्थनगर, महाराजगंज)
- बुन्देलखण्ड मे यूपी के जिले : चित्रकूट, बांदा, महोबा, हमीरपुर, झांसी, जालौन, ललितपुर (कुल 7 जिले)
- राज्यो व देशो से सीमा साझा करने वाले जिले : 35
- किसी राज्यो व देशो से सीमा साझा न करने वाले जिले : 40
-
- दिल्ली NCR में शामिल जिले : 8 जिले (मेरठ, गाजियाबाद, गौतम बुद्ध नगर, बुलन्द शहर, हापुड़, बागपत, मुजफ्फरनगर, शामली)

उत्तर प्रदेश

- सर्वाधिक वन वाला जिला : सोनभद्र
- सबसे कम वन वाला जिला : सन्तरविदास नगर (भदोही)
- राष्ट्रीय उद्यान : 1 (दुधवा राष्ट्रीय पार्क, लखीमपुर खीरी)
- टाइगर रिजर्व : 04
- वन्य जीव विहार :
- पक्षी अभयारण्य :
- राज्य का प्रथम वन्य जीव विहार : चन्द्रप्रभा (चन्दौली, 1957)
- राज्य का सबसे बड़ा वन्य जीव विहार : हस्तिनापुर वन्य जीव विहार (20,73 वर्ग किमी)
- राज्य का सबसे छोटा वन्य जीव विहार : महावीर स्वामी वन्य जीव विहार, वाराणसी (7 वर्ग किमी.)
- राज्य का प्रथम पक्षी विहार : नवाबगंज प वि., उन्नाव (1984)
- राज्य का सबसे बड़ा पक्षी विहार : लाख महोशी प. विहार, कन्नौज (80 वर्ग किमी.)
- राज्य का सबसे छोटा पक्षी विहार : पटना पक्षी विहार, एटा (1 वर्ग किमी.)

नियुक्तियां

- राज्य के प्रथम मुख्यमंत्री : पं. गोविन्द बल्लभ पंत (1 अप्रै. 46 से 27 दिस. 1954)
- राज्य एवं देश की प्रथम महिला मुख्यमंत्री : सुचेता कृपलानी
- राज्य की द्वितीय महिला मुख्यमंत्री : सुश्री मायावती
- वर्तमान मुख्यमंत्री :
- सबसे कम उम्र के मुख्यमंत्री सर्वाधिक बार मुख्यमंत्री : अखिलेश यादव
- सर्वाधिक बार मुख्यमंत्री : सुश्री मायावती (चार बार)
- उ.प्र. के मुख्यमंत्री व देश के प्रधानमंत्री : चौ. चरणसिंह व विश्वनाथ प्रताप सिंह
- राज्य की प्रथम राज्यपाल : श्रीमती सरोजनी नायडू (भारत कोकिला)
- राज्य एवं देश की प्रथम महिला राज्यपाल : श्रीमती सरोजनी नायडू
- वर्तमान राज्यपाल :
- स्वतंत्रता के बाद प्रथम विधानसभा अध्यक्ष : राजर्षि पुरूषोत्तम दास टण्डन
- वर्तमान विधानसभा अध्यक्ष :
- स्वतंत्रता के बाद प्रथम विधान परिषद सभापति : श्री चन्द्रभाल
- विधान सभा के (वर्तमान) सभापति :
- प्रथम मुख्य न्यायाधीश (इला. हाईकोर्ट) : न्यायमूर्ति कमलाकान्त वर्मा (1946-1947)
- वर्तमान मु. न्यायाधीश (इला. हाईकोर्ट) :
- उत्तर प्रदेश मे 75 जिले है जिनके मुख्यालय वही है। कुछ भिन्न मुख्यालय वाले जिले

जिला	मुख्यालय	जिला	मुख्यालय
अमेठी	गौरीगंज	जालौन	उरई
संभल	पवांसा	कौशांबी	मंझनपुर
संतकबीर दास	खलीलाबाद	सिद्धार्थ नगर	नौगढ़
फर्रूखाबाद	फतेहगढ़	सोनभद्र	राबर्टसगंज
गौतमबुद्ध नगर	नोएडा	कानपुर देहात	अकबरपुर माती
		कुशीनगर	पड़रौना

- **18 मण्डल से सम्बद्ध जिले -**

1) लखनऊ — लखनऊ , उन्नाव, रायबरेली, सीतापुर, हरदोई व खीरी लखीमपुर (6)

उत्तर प्रदेश

2) कानपुर — कानपुर नगर , कानपुर देहात, इटावा, फर्रूखाबाद, कन्नौज व औरैया (6)

3) मेरठ — मेरठ, गाजियाबाद, बुलंदशहर, गौतमबुद्ध नगर, बागपत व हापुड़ (6)

4) फैजाबाद — फैजाबाद , सुल्तानपुर, बाराबंकी, अमेठी व अम्बेडकर नगर (5)

5) अलीगढ़ — अलीगढ़, एटा, हाथरस व कासगंज (4)

6) आगरा — आगरा , मथुरा, फिरोजाबाद व मैनपुरी (4)

7) वाराणसी — वाराणसी , जौनपुर, गाजीपुर व चन्दौली (4)

8) गोरखपुर — गोरखपुर , महराजगंज, देवरिया व कुशीनगर (4)

9) देवीपाटन (गोंडा .मुख्या) — गोंडा, बलरामपुर, श्रावस्ती व बहराइच (4)

10) बरेली — बरेली , बदायूं, शाहजहांपुर व पीलीभीत (4)

11) मुरादबाद — मुरादाबाद, रामपुर, बिजनौर, अमरोहा व संभल (5)

12) इलाहाबाद — इलाहाबाद , प्रतापगढ़, फतेहपुर, कौशाम्बी (4)

13) चित्रकूट धाम (मुख्य बांदा) — हमीरपुर, बांदा, चित्रकूट, महोबा (4)

14) मिर्जापुर — मिर्जापुर, सोनभद्र व भदोही (3)

15) आजमगढ़ — आजमगढ़ , मऊ, बलिया (3)

16) बस्ती — बस्ती , सिद्धार्थनगर व संत कबीरनगर (3)

17) झाँसी — झाँसी , ललितपुर व जालौन (3)

18) सहारनपुर — सहारनपुर, मुजफ्फरनगर व शामली (3)

2. उत्तर प्रदेश का इतिहास

प्रागैतिहासिक काल

- भारत में पाषाणिक सभ्यताओं की खोज की शुरुआत 1863 से होती है, रॉबर्ट ब्रूस फुट को पल्लवरम (तमिलनाडु) से एक पाषाणोपकरण प्राप्त हुआ।
- उत्तर प्रदेश में पुरा पाषाणकालीन सभ्यता के साक्ष्य इलाहाबाद के बेलनघाटी, सोनभद्र के सिंगरौली घाटी तथा चन्दौली के चकिया नामक पुरास्थलों से मिले।
- उत्तर प्रदेश में बेलन घाटी के लोहदा नाला क्षेत्र नामक स्थल से पाषाण उपकरणों के साथ-साथ एक अस्थि निर्मित मातृ देवी की प्रतिमा भी मिली है।

मध्य पाषाण काल

- मध्य पाषाणकालीन संस्कृति के साक्ष्य - मिर्जापुर, प्रतापगढ़, इलाहाबाद, सोनभद्र जिले मे मिले।
- मध्य पाषाण काल में सरायनाहर से 15 शवाधान मिले हैं, महदहा स्थल से उपकरणों के साथ-साथ सिल-बट्टा, अस्थि एवं सींग के आभूषण, गर्त चूल्हे के साक्ष्य मिले।
- उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद के मेजा तहसील के पुरास्थल से झोंपड़ियों एवं मिट्टी के बर्तनों के अवशेष मिले हैं।
- इस काल मे मानव थोड़ा बहुत कृषि एवं पशुपालन करने, मृतक की अन्त्येष्टि करने तथा आग पर भोजन पकाने की प्रक्रिया करने लगा था।

नव पाषाणकाल

- नव पाषाणकालीन के साक्ष्य इलाहाबाद के कोल्डिहवा, महदहा, पंचोह और मिर्जापुर, सोनभद्र, प्रतापगढ़ मे मिले।
- नवपाषाणिक स्थलों से झोंपड़ियाँ बनाने, कृषि किये जाने, मिट्टी के बर्तन बनाने तथा पशुपालन के साक्ष्य मिले हैं।
- नव पाषाण स्थलों में धान की खेती के साक्ष्य कोल्डिहवा (इलाहाबाद) से मिले हैं।

ताम्र पाषाण काल

- मेरठ (आलमगीर) तथा सहारनपुर (बडागांव व हुलास) , मुजफ्फरनगर (माण्डी) तथा बुलन्दशहर मे मिले।
- सिन्धु सभ्यता एक ताम्र-कांस्य सभ्यता थी। क्योंकि मानव ने सबसे पहले तांबे का प्रयोग किया। इस सभ्यता के साक्ष्य मेरठ, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर और बुलन्दशहर से मिले हैं।
- नवीन खोजों के अनुसार बुलन्दशहर के भटपुरा एवं मानपुरा स्थलों तथा मुजफ्फरनगर के मांडी गाँव तथा कैराना क्षेत्र से भी सिन्धु या सैन्धव सभ्यता के साक्ष्य प्राप्त हुए है।

वैदिक और उत्तर वैदिक काल

- वैदिक संस्कृति का विस्तार उत्तर प्रदेश से लेकर बंगाल तक हुआ था।
- उत्तर वैदिक संस्कृति का मुख्य केन्द्र मध्य देश (उत्तर प्रदेश) था, जो सरस्वती से लेकर गंगा के दोआब तक विस्तृत था। कुरु और पांचाल जैसे विशाल राज्य थे।
- पांचाल राज्य का विस्तार बरेली, बदायूँ, फर्रुखाबाद आदि क्षेत्रों तक था और इसकी उत्तरी भाग की राजधानी अहिच्छत्र एवं दक्षिणी भाग की राजधानी काम्पिल्य थी। परीक्षित और जनमेजय इसी राज्य के राजा थे।
- कुरु राज्य का आधिपत्य मेरठ, दिल्ली व थानेश्वर तक विस्तृत था और इसकी राजधानी इन्द्रप्रस्थ थी।
- शतपथ ब्राह्मण में कोशल (अवध) का उल्लेख मिलता है जिसकी राजधानी 'साकेत' (अयोध्या) थी। अयोध्या का प्राचीन नाम अयाज्सा था।

उत्तर प्रदेश

- उत्तर प्रदेश एक पवित्र स्थल है, क्योंकि हिन्दुओं के प्रसिद्ध धार्मिक ग्रन्थों रामायण तथा महाभारत में वर्णित श्रीराम और श्रीकृष्ण का जन्म यहीं हुआ था।
- ऐसा माना जाता है कि कुरुवंश के राजा दुष्यन्त के बेटे भरत के नाम पर हमारे देश का नाम भारत पड़ा।

महाजनपद काल

- बौद्ध ग्रन्थ अंगुत्तरनिकाय और जैन ग्रन्थ 'भगवती सूत्र' से पता चलता है कि उत्तर भारत 16 बड़े महाजनपदों में विभाजित था।
- भारत के 16 महाजनपदों में से 8 वर्तमान उत्तर प्रदेश में स्थित थे।
- काशी का सर्वप्रथम उल्लेख अथर्ववेद में मिलता है। महाभारत के अनुसार काशी की स्थापना दिवोदास ने की थी। फ्रांसीसी यात्री बर्नियर ने काशी को भारत का एथेन्स कहा है।

क्र0	महाजनपद	राजधानी	आधुनिक क्षेत्र
1	काशी (राजतन्त्र)	वाराणसी	वाराणसी के आस-पास
2	वत्स (राजतन्त्र)	कौशाम्बी	इलाहाबाद के आस-पास
3	कोशल (राजतन्त्र)	साकेत (अयोध्या/श्रावस्ती)	अयोध्या के आस-पास
4	पांचाल (राजतन्त्र)	उत्तरी पांचाल - अहिच्छत्र दक्षिणी पांचाल - काम्पिल्य	बरेली, बदायूँ, फर्रूखाबाद के आस-पास
5	कुरु (राजतन्त्र)	इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली)	मेरठ, दिल्ली, थानेश्वर के आस-पास
6	शूरसेन (राजतन्त्र)	मथुरा	मथुरा के आस-पास
7	मल्ल (गणतन्त्र)	कुशीनगर	देवरिया के आस-पास
8	चेदि (राजतन्त्र)	शक्तिमती (बाँदा)	बुन्देलखण्ड क्षेत्र

जैन धर्म

- महावीर स्वामी से पहले पार्श्वनाथ, सम्भवनाथ, चन्द्रप्रभा आदि प्रसिद्ध तीर्थकरों का जन्म उत्तर प्रदेश में ही हुआ
- जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ वाराणसी के थे।
- कुषाण काल में भी मथुरा जैन धर्म का एक समृद्ध केन्द्र था।
- 'आदिनाथ' तीर्थंकर की जन्मभूमि अयोध्या थी।
- अयोध्या : प्रथम तीर्थंकर ऋषभनाथ, द्वितीय तीर्थंकर अजितनाथ, चतुर्थ तीर्थंकर अभिनन्दनाथ एवं पंचम तीर्थंकर सुमतिनाथ का जन्म स्थल ।

बौद्ध धर्म

- गौतम बुद्ध का जन्म नेपाल में लुम्बिनी नामक स्थान पर हुआ था। इनके पिता एक छोटे गणराज्य कपिलवस्तु के निर्वाचित राजा थे। कपिलवस्तु उत्तर प्रदेश के सिद्धार्थ नगर जिले में स्थित है। गौतम बुद्ध की माता महामाया देवदह राज्य के कोलिय परिवार से सम्बन्धित थीं। देवदह राज्य वर्तमान मे बस्ती जिले में स्थित है।
- गौतम बुद्ध ने अपना पहला उपदेश सारनाथ (ऋषिपत्तन) में दिया। इस घटना को 'धर्म चक्रप्रवर्तन' कहा गया। गौतम बुद्ध ने अपने जीवन के सर्वाधिक उपदेश कौशल देश की राजधानी श्रावस्ती में दिये।
- गौतम बुद्ध का महापरिनिर्वाण 80 वर्ष की अवस्था में कुशीनगर 483 ई.पू. में हुआ।

उत्तर प्रदेश

- उत्तर प्रदेश में उस समय काशी, कौशाम्बी, मथुरा, साकेत, श्रावस्ती, हस्तिनापुर, अहिच्छत्र आदि प्रमुख नगर थे।
- आजीवक सम्प्रदाय के प्रवर्तक मक्खलि गोशाल का जन्म श्रावस्ती के निकट श्रावण में हुआ था।
- मथुरा को भारतीय मूर्तिकला का जन्म स्थान कहा जा सकता है। यहाँ से मथुरा कला शैली में बुद्ध की प्रथम मूर्ति निर्मित हुई थी।
- श्रावस्ती में बुद्ध ने सर्वाधिक वर्षावास किया था।

मौर्य साम्राज्य

अशोक के 40 से भी अधिक अभिलेख प्राप्त हो चुके हैं। जो उत्तर प्रदेश मे निम्न है-

(1) अहरौरा (मिर्जापुर) का लघु शिलालेख,

(2) टोपरा (सहारनपुर) का स्तम्भ लेखा,

(3) मेरठ का स्तम्भ लेख,

(4) कौशाम्बी का स्तम्भ लेख तथा

(5) सारनाथ का लघु स्तम्भ लेख ।

- टोपरा एवं मेरठ स्तम्भ लेख को फिरोज तुगलक द्वारा दिल्ली में तथा कौशाम्बी स्तम्भ लेख को अकबर द्वारा प्रयाग (इलाहाबाद) के किले में स्थापित कराया गया।
- भारत सरकार ने अपना राजकीय चिह्न सारनाथ लघु स्तम्भ से लिया गया है।
- अशोककालीन पाषाण कलाकृतियों तथा लेखों का निर्माण चुनार (मिर्जापुर) के बलुरु पत्थर से किया गया है।
- अशोक का प्रयाग स्तम्भ को 'रानी का अभिलेख' भी कहा जाता है।
- अशोक का चौदहवाँ शिलालेख कालसी से प्राप्त हुआ है। यहाँ से संस्कृत पदों से उत्कीर्ण ईंटों की एक वेदी मिली है, जो तृतीय सदी के शासक शीलवर्मन के अश्वमेध यज्ञ स्थल का साक्ष्य है।
- प्रयाग के अशोक स्तम्भ पर हरिषेण द्वारा रचित समुद्रगुप्त का प्रशस्ति लेख उत्कीर्ण है।

कुषाण वंश

- कुषाण पश्चिमोत्तर भारत के पार्थियनों, पल्लवों और शकों को परास्त कर भारत में कुषाण वंश की स्थापना की। कुषाण वंश का प्रथम शासक कुजुल कडफिसेस था। कुजुल के बाद विम कडफिसेस ने सत्ता सँभाली।
- विम कडफिसेस ने सर्वप्रथम सोने के सिक्के चलवाये। उसके कुछ सिक्कों पर शिव, नदी तथा त्रिशूल की आकृतियाँ मिलती हैं।
- भारत के कुषाण राजाओं में सबसे महान् कनिष्क था। कनिष्क का साम्राज्य गन्धार से अवध और वाराणसी तक विस्तृत था और इसकी राजधानी पुरुषपुर (पेशावर) थी।
- मथुरा में कुषाण काल के जो सिक्के, अभिलेख, संरचनाएँ और मूर्तियाँ मिलती हैं। कुषाण काल की स्वर्ण मुद्राएँ मुख्यतः सिन्धु के पश्चिम में ही पायी गई हैं,
- कुषाण काल में मथुरा व्यापार और संस्कृति का प्रमुख केन्द्र था।
- कुषाण राजवंश मे कई शैलियाँ विकसित हुई, जैसे-गान्धार और मथुरा शैली।

उत्तर प्रदेश

गुप्त वंश

- मगध में गुप्त राजवंश की स्थापना श्री गुप्त ने की थी, इस वंश का वास्तविक संस्थापक घटोत्कच था। घटोत्कच के बाद उसका पुत्र चन्द्रगुप्त प्रथम मगध का शासक बना। इसने मगध की सीमा को काशी तथा कौशल तक बढ़ाया।
- चन्द्रगुप्त प्रथम के बाद समुद्रगुप्त(भारत का नेपोलियन) ने पद सँभाली। सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश गुप्त साम्राज्य का अग था। मथुरा एशिया से सम्बद्ध रेशम मार्ग से जुड़ा था।
- समुद्रगुप्त के बाद उसका पुत्र चन्द्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य) गद्दी पर बैठा। वह विद्या का बड़ा प्रेमी था। उसके दरबार में कालिदास, अमरसिंह, शंकु, धनवन्तरि घटकर्पर, वेताल भट्ट, क्षपणक और वारामिहिर नामक नौ विद्वान निवास करते थे। चन्द्रगुप्त द्वितीय स्वयं भी विद्या प्रेमी था। इसके शासनकाल को गुप्त काल का स्वर्ण काल कहा जाता है।
- उत्तर प्रदेश में भीतरगाँव (कानपुर), भितरी (गाजीपुर), दशावतार मन्दिर, देवगढ़ (झाँसी) से गुप्तकालीन ईंट के बने मन्दिर के अवशेष मिलते हैं।
- देवगढ़ से प्राप्त पुरातात्विक साक्ष्यों से गुप्तकाल के विशेष स्थापत्य एवं मूर्तिकला के साक्ष्य मिले है। यहाँ के गुप्तकालीन मन्दिरों में दशावतार मन्दिर उल्लेखनीय है। दशावतार मन्दिर की विशेषता यह है कि इसमें बारह मीटर ऊँचा शिखर है जो भारतीय मन्दिर निर्माण में शिखर का सम्भवतः पहला उदाहरण है। जहाँ अन्य मन्दिरों में केवल एक मण्डप होता था, उसके विपरीत इसमें चार मण्डप हैं।
- गुप्तकाल में उत्तर प्रदेश में आर्थिक, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का अद्वितीय विकास हुआ।
- गुप्त राजाओं द्वारा सर्वाधिक स्वर्ण मुद्राएँ जारी की गयीं। इनकी स्वर्ण मुद्राओं को दीनार कहा जाता था।

पुष्यभूति (वर्धन वंश)

- पुष्यभूति वंश (वर्धन वंश) का संस्थापक पुष्यभूति था। चीनी यात्री ह्वेनसांग हर्षवर्धन के समय में भारत आया था।
- हर्ष का साम्राज्य थानेश्वर से लेकर दक्षिण में नर्मदा नदी के तट तक तथा पूर्व में गजाम से लेकर पश्चिम में बल्लभी तक विस्तृत था।
- कन्नौज को उसकी समृद्धि के कारण 'नगर महोदय श्री' कहा जाता था।
- हर्ष द्वारा उत्तर प्रदेश में दो बौद्ध सम्मेलनो (कन्नौज और प्रयाग) का आयोजन किया गया।
- हर्षवर्धन के दरबार मे बाणभट्ट नामक कवि रहते थे, जिन्होने कादम्बरी की रचना की है।
- हर्षवर्धन ने संस्कृत में प्रमुख 3 नाटको की रचना की - प्रियदर्शिका, रत्नावली, नागानन्दा
- हर्षवर्धन ने कन्नौज में भद्र विहार नामक ज्ञान के वृहद केन्द्र की स्थापना की थी।

दिल्ली सल्तनत

- उत्तर प्रदेश का अधिकांश क्षेत्र दिल्ली सल्तनत का अंग रहा। मोहम्मद गोरी के विश्वासपात्र गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक (1206 ई.) के दिल्ली के सिंहासन पर बैठने के साथ ही गुलाम वंश का शासन शुरू हुआ। लेकिन इसकी राजधानी लाहौर थी। इल्तुतमिश ने राजधानी दिल्ली बनाई।
- इल्तुतमिश ही दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु के समय वह बदायूँ का सूबेदार (गवर्नर) था।
- सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी के समय कड़ा (इलाहाबाद) के निकट पश्चिम में गंगा तट पर स्थित) का सूबेदार अलाउद्दीन खिलजी था।

- तुगलक वंश के शासक फिरोज तुगलक ने जौना खाँ (मोहम्मद बिन तुगलक) की स्मृति में जौनपुर नगर की स्थापना की। जौनपुर नगर को शिक्षा, संस्कृति, कला एवं व्यापार का प्रमुख केन्द्र बन जाने के कारण इसे 'शिराज-ए-हिन्द' (पूर्व का शिराज) नाम से पुकारा जाने लगा।
- लोदी वंश के सुल्तान सिकन्दर लोदी ने 1504 ई. में आगरा शहर की नींव डाली तथा इसे 1506 ई. मे अपनी उपराजधानी बनाया।
- भक्त सन्त मलूकदास की जन्मस्थली कड़ा थी।
- पद्मावत के रचयिता मलिक मुहम्मद जायसी जौनपुर के निवासी थे।
- सल्तनत काल में बदायूँ सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण इक्ता था। सुल्तान बनने से पूर्व इल्तुतमिश यहीं का इक्तादार था। सूफी सन्त शेख निजामुद्दीन औलिया एवं इतिहासकार अब्दुल कादिर बदायूँनी का सम्बन्ध बदायूँ से था।
- इतिहासकार जियाउद्दीन बरनी बुलन्दशहर जिले में स्थित बरन का निवासी था।

मुगल साम्राज्य

- बाबर ने पानीपत के प्रथम युद्ध (1526 ई.) में इब्राहिम लोदी को पराजित कर, दिल्ली सल्तनत को समाप्त कर मुगल साम्राज्य की स्थापना की
- शेरशाह सूरी से चौसा (1539) ई. तथा कन्नौज के युद्ध (1540) ई. में पराजित होना पड़ा।
- शेरशाह सूरी एक अफगान था तथा उसके बचपन का नाम फरीद था।
- शेरशाह सूरी 1540 से 1545 ई. तक दिल्ली का शासक रहा। कालिंजर पर आक्रमण (1545 ई.) के दौरान तोप का गोला (आग्नेयास्त्र) फट जाने से उसकी मृत्यु हुई।
- हुमायूँ की मृत्यु के बाद 1556 ई. में कालानौर (पंजाब) में उसके पुत्र अकबर की दिल्ली के शासक के रूप में ताजपोशी की गई। हालाँकि परिस्थितियों का लाभ उठाकर हेमू के नेतृत्व में अफगानों ने आगरा सहित दिल्ली पर कब्जा कर लिया था तथापि पानीपत के द्वितीय युद्ध (1556 ई) में हेमू मारा गया तथा अकबर दिल्ली की राजगद्दी पर बैठा।
- राजा बीरबल काल्पी का मूल निवासी था। काल्पी में ही बीरबल का रंग महल तथा मुगल टकसाल के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- बाबर ने सम्भल में जामा मस्जिद का और मीर बाकी ने अयोध्या में बाबरी मस्जिद का निर्माण कराया।
- फतेहपुर सीकरी, आगरा व इलाहाबाद के किलों का निर्माण अकबर ने कराया था। अकबर ने ही 'प्रयाग' की पुनर्स्थापना कर इसे 'इलाहाबाद' नाम दिया था।
- सिकन्दरा (आगरा) में मुगल सम्राट अकबर ने अपना मकबरा बनवाया था जिसे 1613 ई. में सम्राट जहाँगीर ने पूर्ण करवाया था ।
- फतेहपुर सीकरी में खास महल, पंचमहल, जोधाबाई महल, बुलन्द दरवाजा, जामा मस्जिद, बीरबल महल, शेख सलीम चिश्ती के मकबरे व इस्लाम खाँ के मकबरे का निर्माण अकबर ने कराया।
- आगरा में जहाँगीर महल का निर्माण अकबर ने कराया।
- सिकन्दरा में अकबर के मकबरे तथा मरियम-उज-जमानी
- के मकबरे का निर्माण जहाँगीर द्वारा कराया गया।
- आगरा में अपने पिता गियासबेग के सम्मान में एत्माद् उद्-दौला के मकबरे का निर्माण नूरजहाँ द्वारा करवाया गया। इसे छोटा ताजमहल भी कहा जाता है।
- आगरा के किले में दीवाने-आम, दीवाने-खास, मोती मस्जिद एवं विश्व प्रसिद्ध ताजमहल का निर्माण शाहजहाँ द्वारा करवाया गया।

उत्तर प्रदेश

शेरशाह सूरी द्वारा निर्मित सड़कें

1. सोनारगाँव (बंगाल) से लाहौर तक (जीटी रोड)(N.H.2)
2. आगरा से बुरहानपुर तक (N.H. 3)
3. आगरा से चित्तौड़ तक (N.H. 8)
4. लाहौर से मुल्तान तक

- अकबर ने नौरत्नों में शामिल दो प्रसिद्ध मन्त्री टोडरमल (सीतापुर) और बीरबल (काल्पी) उत्तर प्रदेश के थे।
- शाहजहाँ द्वारा दिल्ली को मुगलों की राजधानी बनाने से पूर्व तक आगरा ही मुगल साम्राज्य की राजधानी थी।
- 1613 ई में ओरछा नरेश **वीरसिंह बुन्देला** ने झाँसी की स्थापना की थी।

अवध के नवाब

- मुगल साम्राज्य की कमजोरी का लाभ उठाकर 1722 ई. में अवध के सूबेदार सआदत खाँ बुरहान-उल-मुल्क ने स्वायत्त राज्य की स्थापना की। उस समय मुगल बादशाह मुहम्मदशाह था।
- उसने 1764 ई. में बक्सर के युद्ध में भाग लिया इस युद्ध में हेक्टर मुनरो नेतृत्व में अंग्रेजो ने मुगल सम्राट शाहआलम द्वितीय, अवध के नवाब शुजाउद्दौला एवं बंगाल के नवाब मीर कासिम को संयुक्त रूप से परास्त किया।
- आसफउद्दौला ने 1784 ई. में मुहर्रम मनाने के लिए लखनऊ में इमामबाड़ा का निर्माण करवाया था। इसमें स्तम्भों का प्रयोग नहीं किया गया।
- अवध का अन्तिम नवाब वाजिद अलीशाह था। उसके शासनकाल में अवध पर कुशासन का आरोप लगाकर लॉर्ड डलहौजी द्वारा 1856 ई. में ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया।

उत्तर प्रदेश की महत्वपूर्ण इमारते-

इमारतें	निर्माता	इमारतें	निर्माता
अटाला मस्जिद	इब्राहिम शाह शर्की	बुलन्द दरवाजा	अकबर
लाल दरवाजा मस्जिद	मुहम्मद शाह	शेख सलीम चिश्ती का मकबरा	अकबर
बाबरी मस्जिद	मीर बाकी	अकबर का मकबरा	जहाँगीर
आगरा का किला	अकबर	एत्माद्दौला का मकबरा	नूरजहाँ
जहाँगीर महल	अकबर	दीवाने आम, दीवाने-खास	शाहजहाँ
जोधाबाई महल	अकबर	ताजमहल	शाहजहा
पचमहल	अकबर		
खास महल	अकबर		

- सन् 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता आन्दोलन की शुरुआत मेरठ से हुई थी। तात्कालिक कारण तो कारतूसों में सूअर व गाय की चर्बी का प्रयोग होना था।
- बरहामपुर के 19वीं देशी सैनिक टुकड़ी ने 26 फरवरी, 1857 ई. को चर्बीयुक्त कारतूसों के प्रयोग से इनकार कर दिया। उनके विरुद्ध कड़ी कार्यवाही करते हुए 19वीं रेजीमेण्ट को भंग कर दिया। इसके तत्काल बाद कोलकाता के समीप स्थित बैरकपुर के 34वीं देशी सैनिक छावनी के सिपाही मंगल पाण्डे ने 29 मार्च, 1857 ई. को अकेले ही विद्रोह कर दिया तथा अपने साजेण्ट मेजर ह्यूसरन और लेफ्टिनेण्ट बाग को गोली मारकर हत्या कर दी तथा 8 अप्रैल, 1857 को उन्हें फाँसी दे दी गई।

उत्तर प्रदेश

- 10 मई, 1857 को मेरठ स्थित छावनी की 20 एन.आई. तथा तीन एल. सी. की पैदल सैन्य टुकड़ी ने चर्बी वाले कारतूस के प्रयोग से इनकार कर सशस्त्र विद्रोह कर दिया।
- 5 जून, 1857 को नाना साहब को कानपुर का पेशवा घोषित किया और अवध की बेगम हजरत महल ने अपने बेटे विरजिश कादिर को अवध का नवाब घोषित किया।
- बहादुरशाह द्वितीय को गिरफ्तार कर रंगून (बर्मा) भेज दिया गया था।
- दिसम्बर, 1857 को सर कोलीन कैम्पबेल ने कानपुर पर पुन अधिकार कर लिया। कैम्पबेल द्वारा 21 मार्च, 1958) को लखनऊ पर पुनः कब्जा कर लिया गया तथा रानी बेगम हजरत महल नेपाल पलायन कर गयी।
- झाँसी पर 4 अप्रैल, 1858 को सर ह्यूरोज ने अधिकार कर लिया। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई अंग्रेजों (ह्यूरोज) से लड़ते हुए वह 17 जून, 1858 को वीरगति को प्राप्त हो गयी।
- रानी लक्ष्मीबाई की मृत्यु पर जनरल ह्यूरोज ने कहा, "भारतीय क्रान्तिकारियों में यहाँ सोयी हुई औरत अकेली मर्द है।"
- फैजाबाद में 1857 के विद्रोह को मौलवी अहमदुल्ला ने अपना नेतृत्व प्रदान किया।

1857 में उत्तर प्रदेश के विद्रोह

विद्रोह का केन्द्र	**नेतृत्वकर्ता**
लखनऊ	बेगम हजरत महल
कानपुर	नाना साहब, तात्या टोपे
इलाहाबाद	लियाकत अली
झाँसी	रानी लक्ष्मीबाई
बरेली	खान बहादुर
फैजाबाद	मौलवी अहमदुल्ला
मेरठ	कदम सिंह
काल्पी	तात्या टोपे
मथुरा	देवी सिंह

कांग्रेस के उत्तर प्रदेश मे प्रमुख अधिवेशन

1905 - इलाहाबाद

1916 - लखनऊ

1925 - कानपुर

उत्तर प्रदेश के किसान आन्दोलन

- गौरीशंकर मिश्र, इन्द्रनारायण द्विवेदी तथा मदनमोहन मालवीय जी के प्रयासों से उत्तर प्रदेश में 1918 ई. में किसान सभा का गठन किया गया।
- 17 अक्टूबर, 1920 को बाबा रामचन्द्र ने प्रतापगढ़ में 'अवध किसान सभा का गठन किया जिसमें गौरीशंकर मिश्र, जवाहर लाल नेहरू, माताबदल पाण्डेय, देवनारायण पाण्डेय और केदार पाण्डेय की अहम् भूमिका थी।
- हरदोई, बहराइच, सुल्तानपुर, सीतापुर नामक क्षेत्रों में मदारी पासी के नेतृत्व में 'एका आन्दोलन' 1921 ई. में चलाया गया जिसमें किसानों की मुख्य शिकायतें लगान में बढ़ोत्तरी और उपज के रूप में लगान वसूल करने की प्रथा को लेकर थी।
- 'एका आन्दोलन' और 'किसान सभा' में मुख्य अन्तर यह था कि एका आन्दोलन में मूलतः किसानों के साथ छोटे-छोटे जमींदार शामिल थे, जबकि किसान सभा मूलतः किसानों का आन्दोलन था।

- जमींदारों तथा ताल्लुकेदारों का सामाजिक बहिष्कार करने के लिए नई-धोबीबन्द आन्दोलन प्रतापगढ़ में चलाया गया।
- लखनऊ में आखिल भारतीय किसान सम्मेलन का आयोजन 1936 में किया गया था। इस सम्मेलन के प्रणेता प्रो एन. जी. रंगा, इन्दुलाल याज्ञनिक एवं स्वामी सहजानन्द थे।

स्वतन्त्रता आन्दोलन

- गांधीजी की अध्यक्षता में 20 जून, 1920 को इलाहाबाद में खिलाफत कमेटी की बैठक हुई, जिसमें खिलाफत आन्दोलन के प्रस्ताव को पारित किया गया।
- असहयोग आन्दोलन के दौरान 5 फरवरी, 1922 को एक आक्रोशित भीड़ ने पुलिस लाठीचार्ज के विरोध में गोरखपुर के चौरी-चौरा नामक स्थान पर एक पुलिस स्टेशन को घेरकर 22 पुलिस वालों को जिन्दा जला दिया। इस दुर्घटना के बाद गांधीजी के निर्णय पर कॉग्रेस वर्किंग कमेटी ने 12 फरवरी, 1922 को बारदोली से प्रस्ताव पारित करके कानून का उल्लंघन करने वाली सभी गतिविधियों पर प्रतिबन्ध लगा दिया।
- असहयोग आन्दोलन के असमय समाप्त होने से दुखी होकर 1923 ई. में चितरंजन दास एवं मोतीलाल नेहरू ने इलाहाबाद में 'स्वराज पार्टी की स्थापना की।
- उत्तर प्रदेश क्रान्तिकारियों ने 1924 में कानपुर में "हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (एच आर ए) की स्थापना की गयी। इसमें प्रदेश के रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, शचीन्द्र सन्याल आदि क्रान्तिकारी थे। इस एसोसिएशन के मुख्य सेनापति चन्द्रशेखर आजाद थे तथा इसका मुख्यालय आगरा में था।
- इस एच आर ए नामक एसोसिएशन का 1928 ई. में दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में एक सम्मेलन हुआ जिसमें इसका नाम बदलकर हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (एच एस आर ए) कर दिया गया।
- 9 अगस्त, 1925 को लखनऊ-सहारनपुर रेललाइन पर एच एस आर ए के कुछ सदस्यों ने लखनऊ के पास काकोरी नामक स्थान पर ट्रेन से सरकारी खजाने को लूट लिया। इस घटना को काकोरी काण्ड कहा जाता है।
- इस काकोरी काण्ड में राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खान, रोशन सिंह तथा राजेन्द्र लहरी को गिरफ्तार कर फाँसी की सजा सुनाई। इस काकोरी काण्ड के अभियुक्तों का नि शुल्क मुकदमा चन्द्रमान गुप्ता ने लड़ा था। यही बाद में उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री (7 दिसम्बर, 1960 से 1 अक्टूबर, 1963 तक तथा 14 मार्च, 1967 से 2 अप्रैल, 1967 तक और 26 फरवरी, 1969 से 17 फरवरी, 1970 तक) बने।

3. उत्तर प्रदेश का भूगोल

- भूगर्भिक दृष्टि से उत्तर प्रदेश का दक्षिणी सिरा गोडवाना लैण्ड का भू-भाग है। उत्तर प्रदेश के दक्षिण भाग में स्थित पठारी भाग प्रायद्वीपीय भाग का ही अंग है जिसका निर्माण प्री-कैम्ब्रियान युग में हुआ है। उत्तर प्रदेश के उत्तरी भाग पर स्थित शिवालिक श्रेणी के दक्षिण में गंगा, यमुना एवं अन्य सहायक नदियों का विस्तृत मैदान है। इसका निर्माण प्लाइस्टोसीन काल में अवसादीकरण से हुआ है।
- उत्तर प्रदेश का कुल क्षेत्रफल 2,40,928 वर्ग किमी. है, जो भारत के कुल क्षेत्रफल का 7. 3% है। क्षेत्रफल की दृष्टि से उत्तर प्रदेश का देश में राजस्थान, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के बाद चौथा स्थान है। जनसंख्या की दृष्टि से उत्तर प्रदेश का देश में पहला स्थान है। उत्तर प्रदेश का पूर्व से पश्चिम तक विस्तार लगभग 650 किमी. तथा उत्तर से दक्षिण तक विस्तार लगभग 240 किमी है।
- इसकी उत्तरी सीमा नेपाल को छूती है। प्रदेश के उत्तर में अब नेपाल सीमा के साथ उत्तराखण्ड की शिवालिक पर्वत श्रेणियाँ हैं । पश्चिमी और दक्षिणी-पश्चिमी सीमा पर हरियाणा, दिल्ली और राजस्थान हैं तथा दक्षिण में मध्य प्रदेश और पूर्वी सीमा बिहार से लगी हुई है। सम्पूर्ण प्रदेश को तीन प्राकृतिक प्रदेशों में विभाजित किया जाता है

(i) भॉवर एवं तराई का प्रदेश,

(ii) गंगा-यमुना का मैदान

(iii) दक्षिण का पठारी प्रदेश।

(i) भॉवर एवं तराई का प्रदेश

- भॉवर एक पर्वतीय भू-भाग है जो ककड़ तथा पत्थरों से निर्मित है। यह क्षेत्र लम्बाई में सहारनपुर से लेकर कुशीनगर तक है। तराई क्षेत्र भॉवर के दक्षिण में दलदली एवं गाद मिट्टी वाला भू-भाग है जो नम एवं महीन अवसादों से निर्मित है। तराई क्षेत्र का विस्तार उत्तर प्रदेश के बहराइच, गोण्डा, बस्ती, लखीमपुर खीरी, सिद्धार्थ नगर, पीलीमीत, गोरखपुर जिलों में मिलता है। इस क्षेत्र में वर्षा होने के कारण दलदली मैदान पाये जाते हैं।
- तराई क्षेत्र में वर्षा की अधिकता के कारण गन्ने, धान और जूट की खेती अधिक मात्रा में की जाती है।

(ii) गंगा-यमुना का मैदान

- मध्य गंगा के मैदान का विस्तार 500 किमी लम्बाई में तथा 80 किमी चौड़ाई में विस्तृत है। यह भू-भाग सहारनपुर, मेरठ, बिजनौर, मुजफ्फरनगर, बुलन्दशहर, अलीगढ़, हाथरस, मथुरा, आगरा, मैनपुरी, एटा, बदायूँ, मुरादाबाद एवं बरेली जिलों में विस्तृत है।
- यह मैदान गंगा व उसकी सहायक नदियों-यमुना, घाघरा, गोमती, शारदा, राप्ती, रामगंगा, गण्डक द्वारा लाई गई कॉप मिट्टी, कीचड़ एवं बालू द्वारा अत्यन्त उपजाऊ है।
- खादर क्षेत्र का तात्पर्य कछार से है। यहाँ नदियों द्वारा प्रतिवर्ष मिट्टी की परतों में परिवर्तन होता रहता है। यह मिट्टी अत्यन्त उपजाऊ होती है।

(iii) खादर क्षेत्रों में नदियों द्वारा अधिक आवरण क्षय होने से बीहड़ों का निर्माण होता है। जैसे चम्बल व यमुना के दक्षिण का पठारी प्रदेश दक्षिणी पठारी क्षेत्र के अन्तर्गत बुन्देलखण्ड एवं बघेल खण्ड के भू-भाग सम्मिलित है।

दक्षिणी पठारी क्षेत्र

- प्रायद्वीपीय भारत का ही उत्तरी विस्तार है जिसे बुन्देलखण्ड के पठार के नाम से जाना जाता है। यह क्षेत्र प्राचीन चट्टानों एवं नीस चट्टानों से निर्मित है। इस क्षेत्र के अन्तर्गत ललितपुर, झांसी, जालौन, हमीरपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट, इलाहाबाद, मिर्जापुर, सोनभद्र, चन्दौली जिलों के भाग सम्मिलित है।

- इस पठारी क्षेत्र की सामान्य ऊँचाई 300 मीटर के आस पास है तथा कुछ स्थानों पर 450 मीटर से भी अधिक है। मिर्जापुर, सोनभद्र की पहाड़ियाँ लगभग 600 मीटर तक ऊंची है।
- इस क्षेत्र की मुख्य नदियों में चम्बल, बेतवा, केन, सोन और टोस प्रमुख हैं।
- भारत में मृदा अवनालिका क्षरण से सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्र चम्बल घाटी क्षेत्र है।
- बघेलखण्ड क्षेत्र की प्रमुख नदी सोन नदी है। बघेलखण्ड के उत्तर एवं दक्षिण में क्रमशः सोनपुर एवं रामगढ़ की पहाड़ियाँ स्थित है।
- नवीन कॉप मिट्टी को खादर कहा जाता है। खादर क्षेत्र में अधिकांशतः मटिया दोमट एवं दोमट मिट्टी पाई जाती है।

उत्तर प्रदेश की स्थिति

- उत्तर प्रदेश की सीमाएँ केन्द्र शासित प्रदेश दिल्ली सहित कुल 9 राज्यों से लगी हुई है। उत्तर प्रदेश की सीमा को स्पर्श करने वाले राज्य है उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, बिहार ।
- उत्तर प्रदेश की सीमा को स्पर्श करने वाला एकमात्र केन्द्रशासित प्रदेश दिल्ली है। इसकी सीमाएँ उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद एवं गौतमबुद्ध नगर से लगी हुई है।
- उत्तर प्रदेश की पूर्वी सीमा बिहार एवं झारखण्ड राज्य से तथा पश्चिमी सीमा हरियाणा, राजस्थान तथा केन्द्रशासित प्रदेश दिल्ली से तथा उत्तरी सीमा नेपाल देश के अतिरिक्त उत्तराखण्ड एवं हिमाचल प्रदेश से और दक्षिणी सीमा मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ से स्पर्श करती है।
- उत्तर प्रदेश के सर्वाधिक जिलों को स्पर्श करने वाला राज्य मध्य प्रदेश है।
- प्रदेश का एकमात्र जिला सोनभद्र है जो सर्वाधिक 4 प्रदेशों से स्पर्श होता है। यह मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड एवं बिहार को स्पर्श करता है।
- उत्तर प्रदेश की सीमा को स्पर्श करने वाला एकमात्र विदेशी राष्ट्र नेपाल है। उत्तर प्रदेश के महाराजगंज सिद्धार्थनगर, बलरामपुर श्रावस्ती, बहराइच, लखीमपुर खीरी, पीलीभीत जिलों (7 जिले) की सीमा नेपाल को स्पर्श करती है।

उत्तर प्रदेश की जलवायु

- उत्तर प्रदेश की जलवायु उपोष्ण कटिबन्धीय (न अधिक गर्म, न अधिक ठण्डी) है। तराई क्षेत्रों में यह नमी लिये रहती है और दक्षिणी पठारी क्षेत्र में गर्मी में नमी का अस्तित्व नहीं रहता। ग्रीष्म ऋतु में प्रदेश का औसत अधिकतम तापमान 36°C से 39°C तक तथा औसत न्यूनतम तापमान 21°C तक तथा औसत तापान्तर 14°C रहता है। प्रदेश में मुख्यतः तीन ऋतुएँ पायी जाती हैं

(i) शीत ऋतु,

(ii) ग्रीष्म ऋतु.

(iii) वर्षा ऋतु

शीत ऋतु

- प्रदेश में नवम्बर माह से शीत ऋतु शुरू हो जाती है। फरवरी तक निरन्तर रहती है। प्रदेश का जनवरी सर्वाधिक ठण्डा महीना होता है। शीत ऋतु में उत्तर प्रदेश का तापमान उत्तर से दक्षिण की ओर बढ़ता जाता है। शीत ऋतु का अधिकतम औसत तापमान 28.3°C तथा न्यूनतम तापमान 13.3°C रहता है। शीत ऋतु में शीतकालीन चक्रवातों के द्वारा उत्तर प्रदेश के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में 7-10 सेमी तक वर्षा की प्राप्ति होती है।

उत्तर प्रदेश

ग्रीष्म ऋतु

- सूर्य के कर्क रेखा की तरफ बढ़ने के साथ ही प्रदेश के तापमान में वृद्धि शुरू हो जाती है और जून में अपने अधिकतम बिन्दु पर पहुँच जाती है। इस समय सूर्य कर्क रेखा पर सीधे चमकता है। उत्तर प्रदेश में ग्रीष्म ऋतु का औसत अधिकतम तापमान 36 से 39°C तथा न्यूनतम तापमान 21 से 23°C तक होता है। प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में सर्वाधिक औसत तापमान पाया जाता है। इसका कारण इसकी कर्क रेखा से अधिक निकट स्थिति का होना है।
- उत्तर प्रदेश में झाँसी तथा आगरा जिलों में अधिक गर्मी पड़ती है तथा बरेली जिले में सबसे कम गर्मी पड़ती है। ग्रीष्म ऋतु में शुष्क एवं गर्म हवाओं को 'लू' कहते हैं।

वर्षा ऋतु

- उत्तर प्रदेश की अधिकांश वर्षा बंगाल की खाड़ी की मानसून शाखा से प्राप्त होती है। इससे उत्तर प्रदेश की कुल वर्षा का लगभग 75-80% भाग प्राप्त होता है। प्रदेश में लगभग जून से सितम्बर के बीच 83% वर्षा और 17% वर्षा जाड़ों में होती है। वर्षा ऋतु में बंगाल की खाड़ी से उठने वाला मानसून जैसे ही उत्तर प्रदेश में प्रवेश करता है इसे 'पूर्वा' कहते हैं।
- उत्तर प्रदेश में अरब सागर मानसून शाखा से नाममात्र की वर्षा ही प्राप्त होती है। इस शाखा की अधिकांश वर्षा प्रदेश के दक्षिणी पठारी भाग में होती है।
- उत्तर प्रदेश के मैदानी भाग में सर्वाधिक वर्षा सोनभद्र (औसत 184.7 सेमी.) तथा सबसे कम वर्षा अलीगढ़ (औसत) 54.4 सेमी.) में होती है। **(नई रिपोर्ट के अनुसार)**
-

4. प्रमुख नदियां

उद्गम स्थलों के आधार पर प्रदेश की नदियों को तीन प्रकारों में विभाजित किया जाता है, जो निम्न प्रकार हैं

(1) हिमालय से निकलने वाली नदियाँ, जैसे- गंगा, यमुना, काली (शारदा), रामगंगा, गंडक, सरयू (घाघरा या करनाली), अरिज कोसी (रामगंगा की सहायक), रोहिणी, राप्ती आदि।

(2) मैदानी क्षेत्र में स्थित झीलों एवं दलदलों से निकलने वाली नदियाँ, जैसे-गोमती, वरूणा, सई, पाण्डो, ईसन आदि।

(3) दक्षिण के पठारों तथा विन्ध्य श्रेणियों से निकलने वाली नदियाँ, जैसे-सोन, रिहन्द, टोंस, केन, चम्बल, बेतवा, कन्हार आदि ।

- गंगा- यह उत्तरी भारत की सबसे प्रमुख व पवित्र-धार्मिक नदी है। उत्तराखण्ड भागीरथी व अलखनंदा के संगम से देवप्रयाग मे गंगा नाम पड़ता है। गंगा उ.प्र. में बिजनौर जिले में प्रवेश करती है और राज्य में बहते हुए इसमें बायीं ओर से रामगंगा, गोमती व घाघरा आदि नदियाँ तथा दायीं ओर से यमुना, टोंस, चन्द्रप्रभा, कर्मनाशा आदि नदियाँ मिलती है। गंगा नदी को राष्ट्रीय नदी का दर्जा (4 नवम्बर, 2008) प्राप्त है। रामगंगा कन्नौज के निकट, गोमती गाजीपुर के निकट, सई बलिया के निकट, यमुना इलाहाबाद में, टोंस सिरसा (इला.) के निकट गंगा में मिलती हैं। यमुना गंगा नदी सबसे बड़ी सहायक नदी है।
- यमुना - इसका उद्गम बंदर पूँछ के पश्चिमी ढाल पर स्थित यमुनोत्री हिमनद (उत्तरकाशी) है प्रदेश में इसका प्रवेश सहारनपुर के फैजाबाद नामक स्थान पर होता है। यमुना यह गंगा नदी क्रम की सबसे महत्वपूर्ण नदी है।
- रामगंगा - कन्नौज के निकट गंगा में मिलती हैं।,
- गण्डक- यह नेपाल से निकलती है। इसकी दो मुख्य सहायक नदियाँ पश्चिम में काली व पूर्व में त्रिशूल गंगा है। नेपाल से निकलने के बाद प्रदेश के महराजगंज और कुशीनगर जिलों के सीमा पर बहते हुए पटना के निकट गंगा में मिल जाती है।
- चम्बल- इसका उद्गम मध्य प्रदेश में इन्दौर के पास जनापाव पहाड़ी से हुआ है। राजस्थान व म.प्र. के सीमा पर बहती हुई आगरा व इटावा के सीमा पर बहते हुए इटावा के पास यमुना में मिल जाती है। काली सिन्ध, सिप्ता, पार्वती और बनास आदि इसकी सहायक नदियां हैं। इसकी अनियमित जलधारा ने नदी के निकटवर्ती क्षेत्रों में काफी गहरी अवनालिकाओं का निर्माण किया है जोकि चम्बल के बीहड़ों के नाम से प्रसिद्ध हैं।
- बेतवा - यह मध्य प्रदेश में भोपाल के दक्षिण पश्चिम से निकलकर भोपाल, ग्वालियर, ललितपुर, झांसी और जालौन से होती हुई हमीरपुर के निकट यमुना नदी में मिल जाती है। इस नदी की कुल लम्बाई 480 किमी है।
- टोंस (तमसा) - इसका उद्गम मैहर के निकट तमसा कुण्ड से होता है। इसकी सहायक बेलन नदी पर भी 30 मीटर ऊँचा जलप्रपात है। यह सिरसा (इलाहाबाद) के पास गंगा में मिल जाती है।
- केन- केन नदी को संस्कृत में कर्णवती कहा जाता है। इसका उद्गम कैमूर पहाड़ियों का उत्तरी ढाल है। है कैमूर पहाड़ियों से निकलकर यह बुन्देलखण्ड से गुजरती हुई बांदा में प्रवेश करती हुई यमुना नदीं में मिल जाती है। इस नदी की कुल लम्बाई 308 किमी है।
- सोन - इसे स्वर्ण नदी भी कहा जाता है। क्योकि इस नदी मे सोने के कण पाये जाते है। यह अमरकंटक पहाड़ी के शोषाकुण्ड से निकलकर पूर्व की ओर मध्य प्रदेश में बहने के बाद उत्तर प्रदेश के सोनभद्र में बहती हुई बिहार में प्रवेश कर जाती है और पटना के निकट गंगा में मिल जाती है। बनास, गोपद, रिहन्द, कुन्हड़ आदि इसकी सहायक नदियाँ है। यह अपने मार्ग में अनेक प्रपातों का निर्माण करती है। इसकी लम्बाई 780 किमी है।

- गोमती - यह एक स्थलीय नदी है। जिसका उद्गम पीलीभीत जिले के दलदली क्षेत्र से हुआ है। यह गाजीपुर के निकट गंगा नदी मे मिल जाती है। इसी नदी किनारे लखनऊ बसा है। कुल लम्बाई 940 किमी. है।

सिंचाई के साधन

- नलकूप - 74.9%
- नहर - 15.2 %
- कुआँ - 8.8%
- तालाब, झील, पोखर- 0.5%
- अन्य साधन- 0.6%

बाँध का नाम

जिर्गो जलाशय बाँध
माताटीला (रानी लक्ष्मीबाई) बाँध
रामगंगा बाँध
रामगंगा काठी बाँध
रिहन्द (गोविन्द बल्लभ पन्त) बाँध
मुसा कहन्द बाँध
कन्हार बाँध
मेजा जलाशय बाँध
नेवाड़ी बाँध
राजघाट बाँध
औरा बाँध
रेसिन बाँध
मौहदा बाँध
गुण्टा बाँध
पथरई बाँध
अर्जुन बाँध

प्रमुख नदियाँ

- **हिमालयी नदियां** - गंगा (जान्हवी, भागीरथी), यमुना (कालिन्दी, सूर्यपुत्री), गंडक (शालीग्रामी, नारायणी), शारदा (काली, राप्ती, रोहिणी, रामगंगा, हिण्डन, अरिजकोशी, बाणगंगा महाकाली), घाघरा (करनाली), सरयू बूढी आदि है।
- **मैदानी नदियां** - गोमती (गोमल), वरुणा, सर्व पाण्डो, आमी, ईसन, कर्मनाशा आदि है

क्र0	नदी	उद्गम स्थल	राज्य/देश	लम्बाई (KM में)	विलय	सहायक नदियां
1	गंगा	गंगोत्री ग्लेशियर	उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, बिहार, पं. बंगाल, बांग्लादेश	2525 (UP में 1000 KM)	बंगाल की खाड़ी मे	अलकनंदा, भागीरथी, रामगंगा, यमुना, गोमती, घाघरा, गण्डक, कोसी, बागमती

2	यमुना	यमुनोत्री ग्लेशियर	उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश	1376	इलाहाबाद में गंगा नदी मे	गिरी, चम्बल, बेतवा, केन
3	रामगंगा	नैनीताल के निकट		590	कन्नौज में गंगा नदी मे	कोह नदी
4	गोमती	पीलीभीत		940	गाजीपुर मे गंगा नदी मे	सई, जोमकाई, चुहा, गच्छई, बर्ना
5	घाघरा (सरयू)	राक्षसताल (तिब्बत के निकट)	नेपाल मे मांचू व कर्नाली नाम से जानी जाती है	1080	छपरा में गंगा नदी मे	राप्ती, शारदा
6	शारदा	तिब्बत के निकट मिलाप हिमनद)	काली गंगा व चोका नदी नाम से भी जानी जाती है	480	घाघरा नदी मे	
7	गण्डक	तिब्बत नेपाल सीमा पर धौलागिरी पर्वत से	नेपाल मे सालिग्राम नाम, बिहार व उ.प्र. की सीमा बनाती है	300 (भारत में)	पटना के निकट गंगा मे	काली, गण्डक, त्रिशूली
8	राप्ती	रूकुमकोट, नेपाल		640	घाघरा नदी मे	
9	चम्बल	म.प्र. के विन्ध्य पर्वत से	म.प्र., राजस्थान, उ.प्र.	966	इटावा में यमुना नदी मे	काली,सिंध, सिप्ता, पार्वती, बनास, क्षिप्रा, दूधी
10	बेतवा	म.प्र. के रायसेन जिले से	भोपाल, विदिशा, गुना, झांसी, हमीरपुर, ललितपुर	360	हमीरपुर मे यमुना मे	धसान नदी
11	केन	म.प्र. के सतना जिले से		360	बांदा मे यमुना नदी मे	
12	सोन	अमरकण्टक की पहाडी से सोनभद्र	म.प्र., उ.प्र., बिहार	480	पटना के पास गंगा नदी मे	

- गंगा नदी उ.प्र. मे बिजनौर जिले से प्रवेश करती है व 28 जिलो से प्रवाहित होते हुए बलिया से निकल जाती है।

उत्तर प्रदेश

- सर्वाधिक गंगा तट वाला राज्य बदायूँ है, गंगा के तट पर सिरसा (इला.), इलाहाबाद, शृंगवेरपुर (इला.), कालाकांकर (प्रतापगढ़), डलमऊ (रायबरेली), बक्सर (उन्नाव), कानपुर, बिटूर (कानपुर), बिल्लौर (कानपुर), फतेहगढ़ (फर्रुखाबाद), कछलाघाट (बदायूं), गढ़मुक्तेश्वर (हापुड़), आदि 26 नगर हैं बसे है।
- उज्जैन क्षिप्रा नदी के किनारे स्थित है
- गांधी सागर, राणा प्रताप सागर तथा जवाहर सागर बांध चम्बल मे बने है।
- सोन नदी मे सोने के कण पाये जाते है।
- माताटीला बांध, राजघाट बांध बेतवा मे बने है।
- यमुना नदी के तट पर 18 जिले बसे है, इलाहाबाद, कौशाम्बी, हमीरपुर, इटावा, काल्पी बटेश्वर, आगरा, मथुरा, वृन्दावन, बागपत आदि 10 प्रमुख नगर हैं।
- चित्रकूट पयस्विनी या मंदाकिनी तट पर स्थित है।
- देवदरी एवं राजदरी जल प्रपात चंदौली जिले मे स्थित है।

प्रमुख नहरें -

- **शारदा नहर-** यह प्रदेश की सबसे बड़ी सिंचाई करने वाली नहर प्रणाली है जिसका निर्माण 1920 से 1928 के बीच हुआ। यह चम्पावत के वनवासा (उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड व नेपाल सीमा पर) नामक स्थान पर शारदा (काली या महाकाली) नदी से निकली है।
- **ऊपरी गंगा नहर-** इसका निर्माण 1840 से 1854 के बीच हुआ। इस नहर को हरिद्वार के समीप गंगा के दाहिने किनारे से निकाला गया है। इसकी लम्बाई 340 किमी है।
- **निचली गंगा नहर-** इसका निर्माण 1878 में हुआ। यह नहर नरोरा (बुलन्दशहर) नामक स्थान पर गंगा से निकाली गयी है। इससे बुलन्दशहर, अलीगढ़, एटा, फिरोजाबाद, मैनपुरी, फर्रूखाबाद, कानपुर, फतेहपुर और इलाहाबाद जिलों की सिंचाई की जाती है।
- **रामगंगा नहर-** उत्तराखण्ड के पौढ़ी जिले में कालागढ़ नामक स्थान पर रामगंगा नदी पर 1975 में 128 मी. ऊंचा बांध और नहरों का निर्माण किया गया है। इससे उत्तराखण्ड व उत्तर प्रदेश के बिजनौर, अमरोहा, मुरादाबाद, रामपुर आदि जिलों की सिंचाई की जाती है।
- **आगरा नहर-** यह नहर 1874 में बनकर तैयार हुई। इसे दिल्ली के पास (ओखला) हो यमुना के दाहिने किनारे से निकाला गया है। यह दिल्ली, हरियाणा तथा राजस्थान से भी गुजरती है। इसलिए इसे अन्तर्राज्यीय नहर भी कहते है।
- **पूर्वी यमुना नहर-** इसका निर्माण 1830 में किया गया था। यह राज्य की सबसे पुरानी नहर है। यह फैजाबाद (सहारनपुर) नामक स्थान पर यमुना के बाएँ किनारे से निकाली गयी है, जिसकी कुल लम्बाई 1,440 किमी है। यह शाहजहाँ द्वारा खुदवाई गयी थी। बाद में अंग्रेजो द्वारा विस्तार किया गया।
- **गंडक नहर-** यह उत्तर प्रदेश और बिहार राज्य की एक संयुक्त नहर प्रणाली है जो इन दोनों के सीमा बिन्दु से 18 किमी अन्दर नेपाल में बूढ़ी गंडक पर एक बांध बनाकर निकाली गयी है।
- **रानी लक्ष्मीबाई बाँध की नहर-** ललितपुर जिले में बेतवा नदी पर माता टीला स्थान पर निर्मित माता टीला बाँध से गुरसराय और मंदर नामक दो नहरे निकाली गई हैं जिसमें हमीरपुर, झांसी, ललितपुर और जालौन जिलों को लाभ मिलता है।
- **रिहन्द घाटी योजना-** यह योजना सोनभद्र जिले में रिहन्द नदी की तंग घाटी में, पिपरी नामक स्थान पर बनाई गई है। इस योजना से मिर्जापुर, सोनभद्र, इलाहाबाद और वाराणसी जिलों में सिंचाई की जा रही है।
- **केन नहर-** यह उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश की संयुक्त परियोजना है। यह नहर पन्ना (मध्य प्रदेश) के निकट से निकाली गई है।

उत्तर प्रदेश

- **राजघाट बाँध एवं नहर परियोजना-** ललितपुर जिले में बेतवा नदी पर राजघाट बाँध का निर्माण उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश सरकार के बराबर-बराबर सहयोग से किया गया है। बाँध के दोनों ओर नहरे निकाली गई है।
- **हथनी कुण्ड बैराज (5 राज्यों का संयुक्त)-** सहारनपुर के पास यमुना नदी पर इस बैराज का निर्माण सन् 1872 में हुआ था, जिससे पूर्वी और पश्चिमी यमुना नहर को पानी मिलता था। 1978 में भयंकर बाढ़ से क्षतिग्रस्त हो जाने के बाद केन्द्र सरकार की मध्यस्थता में हरियाणा, हिमाचल, उत्तर प्रदेश, दिल्ली और राजस्थान के बीच 12 मई, 1994 को एक समझौता हुआ और दिसम्बर 1994 में नयी हथनी कुण्ड बैराज की आधारशिला रखी गयी, जो 1999 में पूर्ण हो गयी। इसे नया ताजेवाला बैराज भी कहा जाता है।
- **बाण सागर बाँध एवं नहर प्रणाली-** इस संयुक्त परियोजना का निर्माण शहडोल (म०प्र०) जिले में सोन नदी पर किया गया है, जिसमें उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश एवं बिहार (अब झारखण्ड) का योगदान 1:2:1 के अनुपात में है।
- **गोकुल बैराज (पेयजल) -** आगरा व मथुरा की पेयजल समस्या के निदान हेतु गोकुल के समीप यमुना नदी पर इस परियोजना का निर्माण किया जा रहा है।
- **लवकुश बैराज (पेयजल) -** कानपुर में गंगा पर बनने वाले इस बैराज का मुख्य उद्देश्य कानपुर नगर को पेयजल उपलब्ध कराना है।
- **आगरा बैराज (पेयजल) -** यह बैराज आगरा में पेयजल उपलब्ध कराने के लिए ताजमहल से 8 किमी दूर यमुना पर बनाया जा रहा है
- **प्रमुख झीलें/ताल/कुण्ड**

झील	जिला	झील	जिला
करेला व इतौजा झील	लखनऊ	फुल्हार झील	पीलीभीत
नवाबगंज झील	उन्नाव	मदन सागर	महोबा
बड़ाताल (गौखुर)	जहांपुरशाह	औंधी ताल	वाराणसी
सिरसी जलाशय	मिर्जापुर	जिर्गो जलाशय	मिर्जापुर
कुन्द्रा समुन्दर	उन्नाव	राजा का बांध	सुल्तानपुर
लक्ष्मीताल	झांसी	मोती व गौर झील	रामपुर
देवारिया ताल	कन्नौज	मोराय ताल	फतेहपुर
सौज झील	मैनपुरी	कीमठ ताल	आगरा
शेखा झील	अलीगढ़	सरसई झील	इटावा
बखिरा झील	संत कबीर नगर (बस्ती)	रामगढ़ताल व चिलुवाताल	गोरखपुर
गोबिन्द बल्लभ पंत सागर (कृत्रिम झील)	सोनभद्र	अलवारा झील (विदेशी पक्षियों का आगमन स्थल)	कौशाम्बी

5. नदियों किनारे बसे प्रमुख शहर

	शहर	नदी
1	हमीरपुर	यमुना, बेतवा के संगम पर
2	चित्रकूट	मन्दाकिनी
3	लखनऊ, जौनपुर	गोमती
4	मथुरा, आगरा,	यमुना
5	अयोध्या	सरयू
6	बिठूर	गंगा
7	गोरखपुर	राप्ती
8	कौशाम्बी	यमुना
9	बांदा	केन
10	इलाहाबाद, काशी	गंगा, यमुना व सरस्वती के संगम पर
11		

PA.ONE

6. एक जिला एक उत्पाद वाले स्थल

वस्तु	स्थान	वस्तु	स्थान
लकड़ी के खिलौने	वाराणसी	चमड़े का सामान	कानपुर
खेल का समान	मेरठ	प्लायवुड	नजीबाबाद
पीतल की मूर्ति	मथुरा	कागज / लुगदी	सहारनपुर
दियासलाई उद्योग	बरेली	धातुपत्र	मुरादाबाद
एल्युमिनियम	रेनकूट	इत्र/तेल	कन्नौज
एंटीबायोटिक	ऋषिकेश	कालीन	मिर्जापुर
ताले	अलीगढ़	पीतल के बर्तन	मुरादाबाद
उर्वरक	आंवला (बरेली)	सीमेंट	चुर्क
रबड	मोदीनगर (गजियाबाद)	टेराकोटा	गोरखपुर
पाली फाइबर	बाराबंकी	चीनी मिट्टी के बर्तन	चिनहट
विस्फोटक	कानपुर	मिट्टी के बर्तन	खुर्जा
कांच की चूडियां	फिरोजाबाद	काष्ठ नक्काशी	सहारनपुर
काष्ठ पादुका (खड़ऊ)	पीलीभीत	हाथ की छपाई (जिरदोजी)	फर्रुखाबाद
ज़री	बरेली		

प्रमुख नगरों के उपनाम -

ताला नगरी	अलीगढ़	सुहागनगरी, चूड़ीनगरी	फिरोजाबाद
गोरख-धाम, नाथ नगर, गीता प्रेस नगर	गोरखपुर	हींग व गुलाल नगरी	हाथरस
बांस बरेली, सुरमा नगरी	बरेली	कृष्णनगरी, पेंड़ा नगर, पण्डों की नगरी	मथुरा
छोटा दिल्ली, उद्योग नगरी	गाजियाबाद	पीतल नगरी, बर्तनों का शहर	मुरादाबाद
उत्तर प्रदेश का शो विंडो	नोएडा	धान का कटोरा	चन्दौली
काशी की बहन	गाजीपुर	शिराज-ए-हिन्द, पूर्व का शिराज	जौनपुर
कैंची नगर, क्रान्ति नगर	मेरठ	ताजनगरी, पेठानगरी	आगरा
इत्रनगरी, खुशबुओं का शहर	कन्नौज	नवाबों का शहर, चाकुओं का नगर	रामपुर
रामनगर, रामजन्मभूमि, रामचरित मानस जन्मभूमि	अयोध्या	चर्मनगर, उद्योग नगर, पूर्वोत्तर भारत का मानचेस्टर	कानपुर
88 हजार ऋषियों की तपोभूमि, 30 हजार तीर्थो का स्थान	नैमिषारण्य	नवाबों का शहर, बागों का नगर, नजाकत-नफासत का शहर	लखनऊ
लड्डू नगरी	संडीला (हरदोई)	विश्वनाथ नगरी, शिव-नगरी, मुक्ति नगर, , पण्डों का नगर, घाटों की नगरी	वाराणसी
संगम नगरी	इलाहाबाद	आमों का नगर	मलीहाबाद (लखनऊ)
आंवला नगरी	प्रतापगढ़		

उत्तर प्रदेश

कुछ प्रमुख नगरों के प्राचीन नाम-

पुराना नाम	नया नाम	पुराना नाम	नया नाम
लक्ष्मणपुर, लखनपुर	लखनऊ	पिपरहवा	कपिलवस्तु (सिद्धार्थ नगर)
काशी	वाराणसी	अयाज्सा, अवध	अयोध्या (फैजाबाद)
कानकुब्ज, नगर महोदयश्री	कन्नौज	ऋषिपतन	सारनाथ (वाराणासी)
प्रयागराज	इलाहाबाद	ब्रह्मसारिणी	बरसाना (मथुरा)
गोरक्ष नगर	गोरखपुर	शूकर क्षेत्र	सोरो (कासगंज)
कुशीनारा	कुशीनगर	श्रावस्ती	सहेट-महेट (श्रावस्ती)
अहिछत्र	रामनगर (बरेली)	काम्पिल्य	कम्पिल (फर्रुखाबाद)
मधुपुरी	मथुरा		

7. मृदा एवं कृषि

उत्तर प्रदेश की मिट्टी को मुख्य रूप से तीन वर्गों में विभाजित किया जाता है-

(i) काँप मिट्टी,

(ii) मिश्रित लाल एवं काली मिट्टी,

(iii) रेतीली लाल मिट्टी ।

- **काँप मिट्टी**

यह मिट्टी गंगा, यमुना तथा उसकी सहायक नदियों द्वारा निर्मित विशाल मैदानी भाग में पायी जाती है। पुरानी काँप मिट्टी को **बाँगर** तथा नई काँप मिट्टी को **खादर** कहा जाता है।

- **बाँगर-** नदियों के बाढ़ का पानी नहीं पहुँच पाता वहाँ की मृदा को **बाँगर या पुरानी जलोढ़ मृदा** कहा जाता है। इसे दोमट, मटियार, बलुई-दोमट, मटियार दोमट, उपहार मृदा आदि नामों से भी जाना जाता है। इस मृदा में नाइट्रोजन व फॉस्फोरस की कमी पायी जाती है। आदिकाल से निरन्तर कृषि उपयोग में आने से उर्वरा शक्ति क्षीण हो गयी है।
- **खादर-** नदियों के बाढ़ का पानी प्रत्येक वर्ष जहां पंहुच जाता है, वहां खादर मृदा पायी जाती है। खादर मिट्टी हल्के रंग वाली छिद्रयुक्त तथा महीन कणों वाली होती है। इसे **खादर या कछारी या नवीन जलोढ़ मृदा** भी कहा जाता है। इसमें चूना, पोटाश, मैग्नीशियम तथा जीवांशों की अधिकता, जबकि नाइट्रोजन, फॉस्फोरस तथा ह्यूमस पदार्थों की कमी पायी जाती है।
- **ऊसर भूमि-** इस प्रकार की भूमि को **रेह, बंजर एवं कल्लर** नाम से जाना जाता है।
- **लाल मृदा-** इस प्रकार की मृदा का निर्माण बालूमय लाल विन्ध्य चट्टानों के टूटने- फूटने से हुआ है। इस मृदा में नाइट्रोजन, जीवांश, फॉस्फोरस एवं चूना खनिजों की कमी पायी जाती है। इस मिट्टी में दाल, तिलहन, चना, गेहूँ की फसलें उगाई जाती हैं। यह मृदा दक्षिणी इलाहाबाद, मिर्जापुर, झाँसी, सोनभद्र तथा चन्दौली जिलों में पायी जाती है।
- **पड़वा मिट्टी-** यह हल्के लाल रंग की होती है। इस प्रकार की मिट्टी उत्तर प्रदेश के हमीरपुर, जालौन और यमुना नदी के ऊपरी जिलों में पायी जाती है। इस मिट्टी में जैव तत्वों की कमी पायी जाती है। इस मृदा में ज्वार एवं चना की फसलें उगाई जाती हैं।
- **माड़ मृदा या काली मृदा-** इस मृदा का रंग काला (आयरन आक्साइड के कारण) होता है जो कि रेगुर के समान चिकना व काला होता है। यह मिट्टी में जल मिलने पर चिपचिपी हो जाती है। यह मृदा प्रदेश के पश्चिमी जिलों में पायी जाती है। यह मृदा प्रदेश के पश्चिमी जिलों में पायी जाती है। इसे स्थानीय भाषा में करेल या कपास मृदा कहा जाता है। यह प्रदेश के पश्चिमी जिलों तथा बुन्देलखण्ड क्षेत्र में कहीं-कहीं पायी जाती है।
- **नोट -** अवनलिका अपरदन ढालदार खेतों में होता है। ये अवनलिकाएँ या U, V सुरंग के आकार की होती है। प्रदेश का यमुना और चम्बल (इटावा) क्षेत्र अवनलिका अपरदन से सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्र है।
- जौनपुर, आजमगढ़ तथा मऊ जनपद की मिट्टियों मे मुख्यता पोटाश की कमी पाई जाती है।

कृषि

उत्तर प्रदेश एक कृषि प्रधान राज्य है जहाँ लगभग 78% जनसंख्या का मुख्य व्यवसाय कृषि है। उप्र में 'कृषि को अर्थव्यवस्था की रीढ़' कहा जाता है।

- उत्तर प्रदेश 242.01 लाख हेक्टेयर क्षेत्र कृषि में विस्तृत है। कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 70 प्रतिशत है, प्रदेश में सिंचाई का लगभग 73.6% नलकूपों द्वारा तथा लगभग 18.5% नहरों द्वारा, 6.1% कुओं द्वारा, 0.7% तालाब, झील, पोखर द्वारा और 1.1% अन्य साधनों द्वारा सींचा जाता है।

उत्तर प्रदेश

- कृषि को प्रभावित करने वाले कारकों - मृदा, वर्षा, तापमान, जल एवं मानव संसाधन आदि के आधार पर उत्तर प्रदेश को 9 शस्य जलवायु क्षेत्रों मे बांटा गया है -

(1) भॉवर एवं तराई क्षेत्र-सहारनपुर, बिजनौर, रामपुर, पीलीभीत, लखीमपुर खीरी, बहराइच जिलों के क्षेत्र।
(2) पश्चिमी मैदान मेरठ मण्डल क्षेत्र।
(3) मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र-बरेली एवं मुरादाबाद मण्डल क्षेत्र।
(4) दक्षिणी-पश्चिमी समशुष्क क्षेत्र-आगरा मण्डल ।
(5) मध्य मैदानी क्षेत्र-लखनऊ और कानपुर मण्डल तथा फतेहपुर जिला।
(6) बुन्देलखण्ड क्षेत्र-बुन्देलखण्ड के सभी जिले।
(7) उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र-गोरखपुर मण्डल एवं गोंडा।
(8) पूर्वी क्षेत्र-वाराणसी, आजमगढ़ मण्डल तथा प्रतापगढ़ जिला।
(9) विन्ध्य क्षेत्र-सोनभद्र, मिर्जापुर तथा इलाहाबाद जिले के दक्षिणी भाग।

उत्तर प्रदेश में फसलोत्पादन

रबी की फसल - रबी फसल की बुआई शीत ऋतु के शुरुआत अर्थात् अक्टूबर से दिसम्बर के मध्य तक की जाती है। इसके अन्तर्गत गेहूँ, जौ, चना, मटर, सरसों, अलसी, लाही, आलू, तम्बाकू आदि फसलें की जाती हैं।

खरीफ की फसलें- इनकी बोआई मई से जुलाई तक की जाती है और कटाई सितम्बर से अक्टूबर तक कर ली जाती है। खरीफ की फसलें अधिक ताप व अधिक जल की फसलें हैं। इसके अन्तर्गत चावल, मक्का, ज्वार, सोयाबीन, मूँगफली, रामदाना, गन्ना, बाजरा, कोदों, टांगून, सनई (जूट) आदि फसलें की जाती हैं।

जायद की फसलें- जायद के अन्तर्गत ऐसी फसले आती है जिन्हे अत्यधिक समय तक स्टोर करके नहीं रख सकते है। इन फसलों को बहुत अधिक ताप की आवश्यकता होती है। ये फसलें मार्च व अप्रैल में बोई जाती हैं तथा जून-जुलाई में काट ली जाती हैं। इसके अन्तर्गत खीरा, ककड़ी, खरबूजा, तरबूज, लौकी, काशीफल, मूँग, लोबिया, परवल, प्याज आदि अल्प अवधि में तैयार होने वाली फसलें हैं।

प्रमुख कृषि फसलें

गेहूँ- गेहूँ उत्तर प्रदेश की प्रमुख फसल है। इसके लिए 50-75 सेमी वर्षा तथा 10°C-15°C तापमान की आवश्यकता होती है। इसे अक्टूबर-नवम्बर में बोया जाता है तथा मार्च-अप्रैल में काट लिया जाता है। भारत में भी सर्वाधिक गेहूँ का उत्पादन उ.प्र. में ही होता है।

चावल- चावल की खेती के लिए चिकनी और उपजाऊ मिट्टी तथा बोते समय 20°C तापमान और 75-125 सेमी वर्षा की आवश्यकता होती है।

गन्ना- गन्ने की कृषि के लिए चिकनी व दोमट मिट्टी 20°C-26°C तापमान तथा 100-200 सेमी वर्षा की आवश्यकता होती है। यह राज्य की प्रमुख नकदी फसल है। प्रदेश में मेरठ जिले के गन्ने को उच्च कोटि का माना जाता है।

मक्का- प्रदेश में मक्का की फसल जून में बोई जाती है तथा सितम्बर-अक्टूबर में काट ली जाती है।

कपास- प्रदेश में कपास का उत्पादन गंगा-यमुना दोआब, रुहेलखण्ड और बुन्देलखण्ड में सिंचाई के सहारे की जाती है। यह फसल जून-जुलाई में बोई जाती है और अक्टूबर-नवम्बर में चुनाई कर ली जाती है।

अफीम- प्रदेश में अफीम का सर्वाधिक उत्पादन बाराबंकी के बाद गाजीपुर जिले में किया जाता है। गाजीपुर में ही एकमात्र अफीम फैक्ट्री स्थापित है।

नोट- देश में कुल खाद्यान्न उत्पादन में प्रदेश प्रथम स्थान पर है, जबकि पंजाब का दूसरा स्थान है।

- प्रदेश में तम्बाकू का सर्वाधिक उत्पादन वाराणसी, गाजियाबाद, मेरठ, मैनपुरी, सहारनपुर, बुलन्दशहर तथा फर्रुखाबाद जिलों में होता है।

उत्तर प्रदेश

- उत्तर प्रदेश गेहूँ, गन्ना, आलू तथा मसूर के उत्पादन में देश में प्रथम स्थान पर है।
- देश में सर्वाधिक आलू का उत्पादन उत्तर प्रदेश (31%) में होता है।
- प्रदेश में जौ की कृषि शुष्क एवं कोप मृदा में की जाती है। इसे गरीब लोगों का प्रमुख खाद्यान्न माना जाता है।
- प्रदेश में जूट का उत्पादन क्षेत्र सरयू एवं घाघरा के दोआब हैं। प्रदेश में देशी किस्म की जूट पैदा की जाती है।

फलोत्पादन

- देश में फलों के उत्पादन में महाराष्ट्र, गुजरात, तमिलनाडु के बाद उत्तर प्रदेश का चौथा स्थान है।
- उत्तर प्रदेश में आम उत्पादक जिले लखनऊ, सीतापुर, बरेली, मेरठ, वाराणसी, गाजियाबाद, फैजाबाद, बुलन्दशहर, हरदोई, सहारनपुर एवं रायबरेली हैं।
- दशहरी, लंगड़ा, रटौल, लखनऊ सफेदा, मलिहाबादी सफेदा, सुरखा, मटियारी, झाखड़बाग, हुस्नआरा तथा गुलाबखास आदि आम की प्रमुख प्रजातियाँ हैं।
- लखनऊ का मलीहावादी दशहरी, सहारनपुर का सफेदा व चौसा, मेरठ, सहारनपुर व बागपत का रटौल तथा वाराणसी का लंगड़ा आम प्रसिद्ध हैं।
- प्रदेश में उत्पादित आम को देश के विभिन्न शहरों में **'नवाब ब्राण्ड'** नाम से भेजा जाता है। देश के 23% आम का उत्पादन उ.प्र. में होता है। यहीं पर देश का सर्वाधिक आम का उत्पादन होता है।
- प्रदेश में भारत का सर्वाधिक अमरूद का उत्पादन मुख्यतः इलाहाबाद, कौशाम्बी, बदायूँ, कानपुर, फर्रुखाबाद, बरेली और फैजाबाद जिलों में होता है। सफेदा, करेला, हाफजी लखनऊ, धौलका लखनऊ, इलाहाबाद सफेदा आदि इसकी प्रमुख किस्में हैं।
- इलाहाबादी सफेदा, लखनऊ-49 (सरदार) व ललित सुर्खा आदि अमरूद की निर्यातक प्रजातियाँ हैं।
- प्रदेश में आँवला की खेती सर्वाधिक मात्रा में प्रतापगढ़ जिले में की जाती है।
- प्रदेश में केले का उत्पादन मुख्य रूप से इलाहाबाद, कौशाम्बी, वाराणसी और गोरखपुर जिले में बड़े पैमाने पर किया जाता है।
- प्रदेश में लीची का उत्पादन मेरठ और सहारनपुर जिले में किया जाता है।
- प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में मुख्य रूप से नींबू का उत्पादन किया जाता है।
- प्रदेश में सन्तरा की खेती बुन्देलखण्ड के कुछ जिले तथा सहारनपुर के आस-पास के कुछ क्षेत्रों में की जाती
- आम के लिए प्रशिक्षण एवं प्रयोग केन्द्र लखनऊ में स्थापित है।
- अमरूद के लिए प्रशिक्षण एवं प्रयोग केन्द्र इलाहाबाद में स्थापित है।

सब्जी एवं मसालोत्पादन

- देश में सब्जी के उत्पादन में प. बंगाल के बाद उत्तर प्रदेश का दूसरा स्थान है।
- उत्तर प्रदेश आलू के उत्पादन में अग्रणी स्थान रखता है।
- प्रदेश में आलू एवं अन्य शाक-भाजियों के अनुसन्धान के लिए गाजियाबाद में एक 'आलू अनुसन्धान केन्द्र' बाबूगढ़ में स्थापित किया गया है। आगरा में आलू का निर्यात जोन है जहाँ से आलू दूसरे प्रदेशों में 'ताज ब्राण्ड' नाम से बेचा जाता है।
- कन्नौज में पुष्पों से इत्र बनाया जाता है।
- प्रदेश में महोबा, बाँदा, उन्नाव, रायबरेली, बलिया, प्रतापगढ़, सोनभद्र, ललितपुर, अमेठी, गाजीपुर, लखनऊ, वाराणसी, कानपुर, जौनपुर, आजमगढ़, सुल्तानपुर सहित कुल 21 जिलों में पान की खेती की जाती है।

उत्तर प्रदेश

- प्रदेश में महोबा पान की खेती के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध है। यहाँ पर ही 1981 ई में एक पान अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किया गया है।
- महोबा के अलावा पाली क्षेत्र (ललितपुर), बरईमानपुर (बाँदा) क्षेत्र पान की खेती के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध है।
- जटरोफा के बीज से प्राप्त तेल का उपयोग डीजल के विकल्प के रूप में किया जाता है। जटरोफा के रोपण के 4 वर्ष बाद बीज प्राप्त होने शुरू हो जाते हैं।
- मैंथा (पिपरमिण्ट) पुदीना से मिलती-जुलती वनस्पति है। प्रदेश में रामपुर, बदायूँ, बाराबंकी, औरैया, कन्नौज, इटावा, जालौन आदि जिलों में इसकी खेती की जाती है।
- मैंथा के पौधे को अधिक ताप व जल की आवश्यकता पड़ती है। अतः गर्मी में इसकी उपज की जाती है। इस पौधे की पत्तियों के रस से पिपरमिण्ट तैयार किया जाता है।
- उत्तर प्रदेश के नोएडा में खाद्य पार्क की स्थापना की गई है।
- उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद् लखनऊ मे स्थित है।
- उत्तर प्रदेश में कृषक समृद्धि आयोग का गठन 2017 में किया गया।
- उत्तर प्रदेश में भूमि मापन इकाई बीघा है। एक बीघा, 20 बिस्वा के बराबर होता है।
- पहला केंचुआ बीज बैंक इज्जतनगर (बरेली) मे स्थापित है।
- जानवरों को खुला छोड़ देना यानि अन्ना प्रथा बुन्देलखण्ड क्षेत्र के लिए कृषि एवं वानिकी के विकास के लिए एक प्रकार का अभिशाप सिद्ध हुआ है।
- उत्तर प्रदेश की प्रमुख तिलहनी फसल राई एवं सरसो है।
- पशुओं की विशेष चिकित्सा के लिए तीन पशु चिकित्सा पॉलीक्लीनिक गोरखपुर, मुजफ्फरनगर तथा लखनऊ में कार्य कर रहे है।
- उत्तर प्रदेश मे बोयी जाने वाली फसलों मे मूंग की अवधि सबसे कम है। यह अवधि लगभग 60 दिन की है। यह खरीफ और जायद की फसल है।
- उत्तर प्रदेश मे बुन्देलखण्ड क्षेत्र के जालौन, झाँसी, ललितपुर, हमीरपुर, चित्रकूट, बांदा और महोबा में सोयाबीन की खेती की जाती है।
- उत्तर प्रदेश मे दलहनी फसलो मे सर्वाधिक चना उगाया जाता है।
- धान - मक्का - गेहूँ फसल चक्र पूर्वी उत्तर प्रदेश के उपयुक्त समझा जाता है।
- भारत मे मेंथा तेल उत्पादन मे उत्तर प्रदेश का योगदान 90% है। जिसकी खेती बदायूँ, रामपुर, मुरादाबाद, बरेली, पीलीभीत, बाराबंकी, फैजाबाद, अम्बेडकरनगर, लखनऊ आदि जिले मे की जाती है।
- कालानमक चावल, पूर्वी उत्तर प्रदेश में उगाया जाता है, इस चावल को बुद्ध चावल के नाम से भी जाना जाता है।
- शकरकंद, रतालू, कचालू , आलू आदि प्रमुख कंद फसले है जिसमें आलू का गरीबों का मित्र कहा जाता है, यह मूल रूप से दक्षिण अमेरिका का फसल है।
- उत्तर प्रदेश मे कपास की बुआई का उपयुक्त समय अप्रैल का पहला पखवाडा है। कपास की खेती गंगा-यमुना दोआब, बुन्देलखण्ड, रूहेलखण्ड के क्षेत्रों में की जाती है। प्रमुख रूप से आगरा, मथुरा, अलीगढ़ व हाथरस मे कपास की खेती होती है।
- उत्तर प्रदेश का बीज प्रमाणीकरण ब्यूरो आलमबाग (लखनऊ) में स्थित है जिसकी स्थापना 2002 में की गई थी।
- उत्तर प्रदेश मे आलू निर्यात जोन आगरा मे स्थित है।

8. वानिकी एवं जीव

वर्षा, तापमान एवं अन्य भौगोलिक कारकों के आधार पर उत्तर प्रदेश में वनों को तीन वर्गों में विभाजित किया गया है-

(i) उष्ण कटिबन्धीय नम पर्णपाती वन- इस प्रकार के वन तराई के नमी वाले क्षेत्रों में पाये जाते हैं, जैसे-साल, सागौन, महुआ, गूलर, बेर, पलाश, सेमल, आँवला, जामुन, बाँस तथा बेंत आदि।

(ii) उष्ण कटिबन्धीय शुष्क पर्णपाती- वन-इस प्रकार के वन उत्तर प्रदेश के सभी मैदानी भागों में पाये जाते हैं, जैसे-नीम, आम, जामुन, बबूल, पलाश, शीशम, सागौन, बेल, साल, पीपल आदि।

(iii) उष्ण कटिबन्धीय कँटीले वन- इस प्रकार के वन प्रदेश के दक्षिणी भागों में पाये जाते हैं। इन वनों में कँटीले बौने वृक्ष पाये जाते हैं, जैसे-बबूल, कँटीली झाड़ियाँ, साहुण्डु, कँटीले फलदार पौधे आदि।

- सर्वाधिक वनों का क्षेत्रफल – सोनभद्र >चन्दौली >पीलीभीत >मिर्जापुर >चित्रकूट
- इसके अन्तर्गत जलाऊ लकड़ी हेतु यूकेलिप्टस तथा कागज एवं लुग्दी के लिए सयजन और रेयन और माचिस उद्योग के लिए अर्जुन के वृक्षों को लगाया जाता यूकेलिप्टस नामक वृक्ष सामाजिक वानिकी के लिए घातक सिद्ध हुआ है। इसे 'पर्यावरण का आतंकी' कहा गया है।
- भारत सरकार द्वारा 1998 में राष्ट्रीय वन नीति की घोषणा की गयी जिसके अन्तर्गत देश के कुल क्षेत्रफल के 33.3 प्रतिशत (60 प्रतिशत पर्वतीय क्षेत्र में तथा 25% मैदानी क्षेत्रों में) भाग पर वनों का विस्तार आवश्यक है।
- भारतीय संविधान में वन को राज्य सूची का विषय 1935 में बनाया गया है।
- उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिले में कुल वन क्षेत्र का सर्वाधिक क्षेत्रफल 2,541 (37-43%) में वन पाये जाते हैं। इसके बाद क्रमशः लखीमपुर खीरी तथा मिर्जापुर का स्थान आता है। जबकि सबसे कम वनों का क्षेत्रफल सन्तरविदास नगर में 1% (0-12%) पाया जाता है तथा इसके बाद मऊ का स्थान आता है। खुले वन क्षेत्र का सर्वाधिक क्षेत्रफल सोनभद्र जिले में पाया जाता है।

वनों पर आधारित उद्योग-

1. खेल का सामान - मेरठ
2. बेत फर्नीचर - इलाहाबाद, गोरखपुर, आगरा, बरेली
3. लकड़ी के खिलौने - सोनभद्र, वाराणसी, लखनऊ
4. प्लाईवुड - सीतापुर, बिजनौर
5. कागज - सहारनपुर
6. बीड़ी - मिर्जापुर, सोनभद्र, इलाहाबाद, बाँदा, गुरसहायगज (कन्नौज), चित्रकूट, झाँसी
7. प्राकृतिक सिल्क - वाराणसी, मिर्जापुर, मऊ
8. कत्था, रेजिन, माचिस - बरेली

वन महोत्सव-

केन्द्र सरकार द्वारा घोषित 1952 की वन नीति के तहत जुलाई, 1952 से वन महोत्सव (1 से 7 जुलाई) मनाया जाता है। इसका मूल मन्त्र है- "वृक्ष का अर्थ जल है, जल का अर्थ रोटी है और रोटी ही जीवन है।"

- बीड़ी बनाने हेतु तेन्दू के पत्तों का उपयोग किया जाता है तथा माचिस या दियासलाई के निर्माण में गुरेल वृक्षों का उपयोग किया जाता है।

- रेलवे लाइन स्लीपरों और इमारती लकड़ी के रूप में चीड़, साल, देवदार तथा सैन वृक्षों का उपयोग किया जाता है।
- पान के साथ खाया जाने वाला कत्था की प्राप्ति खैर नामक वृक्ष से होती है।
- विरोजा एवं तारपीन के तेल की प्राप्ति चीड़ वृक्ष के छाल से होती है।
- बबूल की छाल से प्राप्त रंग से चमड़े की रंगाई एवं अन्य उपयोग हेतु रंग बनाया जाता है।
- साखू और महुए के पत्ते से पत्तल एवं दोने बनाये जाते हैं।
- रबड़ के रस से रबड़ तथा ताड़ एवं खजूर के रस से ताड़ी प्राप्त की जाती है।

वन्य जीव संरक्षण

- प्रदेश की विविधतापूर्ण भौगोलिक संरचना एवं जलवायु में पाये जाने वाले वन्य जीवों एवं जैव विविधता संरक्षण हेतु विभाग द्वारा प्रदेश में स्थापित 1 राष्ट्रीय उद्यान, 12 वन्य जीव विहार, 13 पक्षी विहार तथा 3 टाइगर रिजर्व का प्रबन्धन है।
- **दुधवा राष्ट्रीय उद्यान -** यह उत्तर प्रदेश में एकमात्र राष्ट्रीय उद्यान है, जो लखीमपुर खीरी और पीलीभीत जिले में 490 वर्ग किमी क्षेत्र में विस्तृत है। 1968 ई. में स्थापित दुधवा पशु विहार को 1977 में राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा प्रदान किया गया। दुधवा राष्ट्रीय पार्क किशन वन्यजीव विहार एवं कतरनियाघाट वन्य जीव विहार क्षेत्र को 1987-88 ई. में बाघ परियोजना में भी शामिल किया गया है। यह राष्ट्रीय उद्यान बाघों और बारहसिंगा के लिए प्रसिद्ध है।ज

प्रदेश के वन्य जीव विहार

1. चन्द्रप्रभा वन्य जीव विहार	चन्दौली	सबसे पुराना
2. किशनपुर वन्य जीव विहार	लखीमपुर खीरी	
3. कतरनिया घाट वन्य जीव विहार	बहराइच	
4. हस्तिनापुर वन्य जीव विहार	मेरठ, मुरादाबाद, मुजफ्फरनगर	सबसे बड़ा
5. सोहागी बरवा वन्य जीव विहार	महाराजगंज	
6. सुहेलवा वन्य जीव विहार	बहराइच, गोंडा	
7. कछुआ वन्य जीव विहार	वाराणसी	
8. पीलीभीत टाइगर रिजर्व	पीलीभीत	
9. रानीपुर वन्य जीव विहार	बाँदा	
10. महावीर स्वामी वन्य जीव विहार	ललितपुर	सबसे छोटा
11. राष्ट्रीय चम्बल वन्य जीव विहार	आगरा, इटावा	
12. कैमूर वन्य जीव विहार	मिर्जापुर, सोनभद्र	

- उत्तर प्रदेश का सबसे पुराना वन्य जीव विहार चन्द्रप्रभा वन्य जीव विहार है। इसकी स्थापना 1957 ई. में की गई थी।
- उत्तर प्रदेश का सबसे बड़ा वन्य जीव विहार हस्तिनापुर वन्य जीव विहार है। यह 2073 वर्ग किमी. क्षेत्र में फैला हुआ है।
-

उत्तर प्रदेश

पक्षी विहार

1	नवाबगंज पक्षी विहार	उन्नाव	सबसे पहला
2	समसपुर पक्षी विहार	रायबरेली	
3	लाख बहोशी विहार	कन्नौज	सबसे बड़ा
4	साण्डी पक्षी विहार	हरदोई	
5	बखीरा विहार	संत कबीर नगर	
6	ओखला पक्षी विहार	गौतमबुद्ध नगर	
7	समान पक्षी विहार	मैनपुरी	
8	पार्वती अरगा पक्षी विहार	गोंडा (जेपी नगर)	
9	विजय सागर पक्षी विहार	महोबा, हमीरपुर	
10	पटना पक्षी विहार	एटा	सबसे छोटा
11	सुरहाताला पक्षी विहार (लोकनायक जयप्रकाश नारायण पक्षी विहार)	बलिया	
12	सूर सरोवर पक्षी विहार	आगरा	
13	भीमराव अम्बेडकर पक्षी विहार	वेंती, कुण्डा (प्रतापगढ़)	

- उ.प्र. का सबसे बड़ा पक्षी विहार लाख बहोशी पक्षी विहार (कन्नौज) है। जो 80 वर्ग किमी में फैला हुआ है।
- राष्ट्रीय चम्बल वन्य जीव विहार योजना में उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान राज्य सम्मिलित हैं। यह योजना भारत सरकार के सहयोग से चलायी जा रही है। मगरमच्छ और घड़ियाल के संरक्षण के उद्देश्य से चम्बल घाटी के क्षेत्र को राष्ट्रीय चम्बल वन्य जीव विहार घोषित किया गया है।
- 1972 से प्रारम्भ 'हाथी परियोजना' (Project Elephant) का उद्देश्य हाथियों की अच्छी संख्या वाले राज्यों में हाथियों, उनके वास-स्थानों तथा आवागमन कॉरिडोरों के संरक्षण हेतु वित्तीय और तकनीकी समर्थन उपलब्ध कराना है।
- मयूर संरक्षण केन्द्र उत्तर प्रदेश के मथुरा (वृंदावन) जनपद मे स्थित है।
- गिद्ध संरक्षण केन्द्र उत्तर प्रदेश के महाराजगंज जनपद मे स्थित है।
- प्रदेश के लखीमपुर खीरी व पीलीभीत जिले में मोहना और सुहैला नदी के बीच स्थित दुधवा' को वर्ष 1987 में प्रदेश का पहला टाइगर रिजर्व घोषित किया गया था। वर्ष 2012 में बिजनौर जिले के 'अमानगढ़' को दूसरा और 13 जून, 2014 को 'पीलीभीत' को तीसरा टाइगर रिजर्व का दर्जा दिया गया।
- अमनगढ़ टाइगर रिजर्व मूल रूप से जिम कार्बेट नेशनल पार्क का हिस्सा था, और उत्तर प्रदेश से उत्तराखण्ड राज्य बनने के बाद, जिम कार्बेट उत्तराखण्ड मे चला गया और अमनगढ़ उत्तर प्रदेश में बना रहा।
- प्रदेश के इटावा में बब्बर शेर प्रजनन केन्द्र एवं लॉयन सफारी पार्क विकसित किया जा रहा है।
- भारत में वन्य जीवों के संरक्षण की सर्वोच्च संस्था भारतीय वन्य जीव बोर्ड है। इसकी स्थापना 1972 ई. में की गई है। इसके अध्यक्ष प्रधानमन्त्री होते हैं।
- 'वन्य' एवं 'वन्य प्राणी' विषय भारतीय संविधान की **समवर्ती सूची** में वर्ष 1976 ई. में 42वें संविधान संशोधन द्वारा सम्मिलित किया गया है।
- प्रदेश में जंगली हाथियों को बचाने के लिए बिजनौर और सहारनपुर जिलों में लगभग 744 वर्ग किमी. तक वन को मिलाकर एलीफैण्टा रिजर्व क्षेत्र घोषित किया गया। इसका मुख्यालय बिजनौर में है।

उत्तर प्रदेश

- हाथियों के संरक्षण के लिए केन्द्रीय योजना 1992 ई. से चलायी जा रही है।
- सम्पूर्ण विश्व के कुल सारस में से 40% उत्तर प्रदेश में पाये जाते हैं। कन्नौज, इटावा, मैनपुरी, अलीगढ़, बुलन्दशहर, औरैया आदि जिलों में सारस अधिक संख्या में पाये जाते हैं। राज्यपक्षी सारस इस समय संकटग्रस्त श्रेणी में आ गया है।
- गंगा डॉल्फिन सैन्क्चुअरी, भागलपुर मे स्थित है।
- बब्बर शेर सफारी इटावा जिले में स्थापित किया गया है।
- शेखा झील अलीगढ़ मे स्थित ताजे पानी की झील है। इसे प्रवासी पक्षियों के लिए नये राष्ट्रीय पक्षी विहार के रूप मे विकसित किया जा रहा है।
- वर्तमान मे भारत मे कुल 82 रामसर स्थल है, जिसमे 10 उत्तर प्रदेश मे, जो निम्न है -

1. ऊपरी गंगा नहर (2005) (उ0प्र0 का पहला रामसर स्थल)
2. सांडी पक्षी विहार, हरदोई (2019)
3. पार्वती आरंगा पक्षी विहार, गोण्डा (2019)
4. समन पक्षी विहार, मैनपुरी (2019)
5. नवाबगंज पक्षी विहार, उन्नाव (2019)
6. समसपुर पक्षी अभ्यारण, रायबरेली (2019)
7. सरसई नावर झील, इटावा (2019)
8. हैदरपुर रामसर, बिजनौर (2021)
9. सूर सरोवर, आगरा (2020)
10. बखीरा वन्यजीव अभ्यारण, संत कबीर नगर (2022)

9. खनिज संसाधन

- उत्तर प्रदेश खनिज संसाधन की दृष्टि से एक निर्धन राज्य है। देश के कुल खनिज उत्पादन का लगभग 4.0 प्रतिशत उत्पादन होता है।
- उत्तर प्रदेश खनिज सम्पदा की खोज एवं विकास हेतु 1955 में भू-तत्त्व एवं खनिज कर्म निदेशालय की स्थापना की गई थी।
- उत्तर प्रदेश में खनिज उद्योग लगाने के उद्देश्य से 1974 ई. में उत्तर प्रदेश राज्य खनिज विकास निगम की स्थापना की गयी।
- उत्तर प्रदेश की पहली खनिज नीति 29 दिसम्बर, 1998 में घोषित की गयी, जिसमें खनिज विकास को उद्योग का दर्जा दिया गया। इसी के तहत् उत्तर प्रदेश ने अपने 10 जिलों (इलाहाबाद, सहारनपुर, झाँसी, ललितपुर, मिर्जापुर, महोबा, जालौन, बाँदा, सोनभद्र तथा हमीरपुर) को खनिज बाहुल्य जिला घोषित किया।
- काँच बालू (सिलिका सैण्ड) के उत्पादन में उत्तर प्रदेश का देश में प्रथम स्थान है। काँच बालू का उत्पादन प्रदेश में इलाहाबाद के शंकरगढ़ एवं यमुना नदी क्षेत्र, झाँसी के मुण्डारी एवं बाला बहेट क्षेत्र, चन्दौली के चकिया क्षेत्र तथा चित्रकूट जिले के लोहगढ़ एवं धानद्रोल क्षेत्र से प्राप्त होता है।
- बॉक्साइट अयस्क से ऐलुमिनियम निकालने का काम रेणुकूट (सोनभद्र) में हिण्डाल्को कम्पनी द्वारा किया जा रहा है। प्रदेश में बॉक्साइट के भण्डार चित्रकूट जिले में पाये गये है।
- डोलोमाइट खनिज मिर्जापुर में कजराहट क्षेत्र तथा बाँदा जिले से प्राप्त होता है। इसका उपयोग निस्सरण, पोर्टलैण्ड सीमेण्ट, प्लास्टर ऑफ पेरिस और रिफ्रैक्टरीज (तापसहा) बनाने के लिए किया जाता है।
- उत्तर प्रदेश में इमारती पत्थर की प्राप्ति मिर्जापुर एवं चुनार से होती है।
- हीरा खनिज रूप में उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले में कुछ मात्रा में तथा मिर्जापुर के घने जंगलों में कुछ मात्रा में पाया जाता है। नये खोजों के आधार पर बाँदा के कालिंजर में हीरे के व्यापक भण्डार होने के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- उत्तर प्रदेश में सोना शारदा एवं रामगंगा नदियों के रेत में सोने के कण पाये जाते हैं। सोनभद्र के हरदी क्षेत्र तथा ललितपुर जिले के भीखमपुर क्षेत्र में स्वर्ण खनिज होने की सम्भावना व्यक्त की गई है।
- ललितपुर में धसान नदी तट पर सोने और प्लेटिनम के निक्षेप प्राप्त हुए हैं।
- उत्तर प्रदेश में कुल खनिज उत्पादन मूल्य का लगभग 35% हिस्सा कोयले का है। उत्तर प्रदेश में कोयले की प्राप्ति सिंगरौली (सोनभद्र) क्षेत्र से होती है। सिंगरौली क्षेत्र में खुदाई का कार्य कोल इण्डिया लि. द्वारा किया जाता है। सिंगरौली में
- उत्तर प्रदेश में ताँबा मुख्यतः आग्नेय एवं परतदार चट्टानों में पाया जाता है। उसका मुख्य उत्पादक जिला ललितपुर है।
- ग्रेनाइट की पट्टियाँ तथा स्लेट ललितपुर मे बनाये जाते है।
- सोनभद्र में सोना एवं कोयले की खोज प्रगति पर है तथा झाँसी में एस्बेस्टस की खोज प्रगति पर है।

खनिज	प्राप्त स्थान
सोना	शारदा एवं रामगंगा नदियों के रेत में, बाँदा, मिर्जापुर
हीरा	बाँदा, मिर्जापुर
ताँबा	ललितपुर (सोनराई क्षेत्र)
यूरेनियम	ललितपुर (सोनराई क्षेत्र)
बेराइट्स	सोनभद्र, मिर्जापुर
एण्डोलुसाइट	मिर्जापुर, सोनभद्र
टाल्क या सेलखड़ी	हमीरपुर, झाँसी

उत्तर प्रदेश

एस्बेस्टस	मिर्जापुर
पाइराइट्स	मिर्जापुर
पोटाश लवण	इलाहाबाद, चन्दौली, बाँदा एवं झाँसी
चूना पत्थर	कजराहट (सोनभद्र), रोहतास (मिर्जापुर), सोनभद्र
डोलोमाइट	मिर्जापुर, बाँदा, सोनभद्र
रॉक फॉस्फेट	बाँदा, ललितपुर
कोयला	सिंगरौली (सोनभद्र)
काँच बालू	इलाहाबाद, चन्दौली, बाँदा, झाँसी
चायना क्ले	सोनभद्र
नॉन प्लास्टिक फायर क्ले	मिर्जापुर
बॉक्साइट	राजगवा (बाँदा), वाराणसी, चन्दौली, ललितपुर
जिप्सम	झाँसी, हमीरपुर
पाइटोफिलाइट	झाँसी, महोबा, ललितपुर, हमीरपुर

PA.ONE

उत्तर प्रदेश

10. ऊर्जा उत्पादन केन्द्र

ताप विद्धुत केन्द्र-

	केन्द्र	स्थान
1	ओबरा ताप विद्युत केन्द्र (1967) (रूस की सहायता से)	सिंगरौली (सोनभद्र)
2	हरदुआगंज ताप विद्युत गृह (1942)	अलीगढ़ के निकट
3	चन्दौसी ताप विद्युत केन्द्र	चन्दौसी (मुरादाबाद)
4	परीक्षा ताप विद्युत केन्द्र	झाँसी के निकट
5	अनपरा ताप विद्युत केन्द्र	सोनभद्र
6	पनकी पावर स्टेशन	कानपुर
7	नेवली पावट स्टेशन	घाटमपुर (हमीरपुर के निकट)

जल विद्युत उत्पादन क्षेत्र

	परियोजना	स्थान
	सार्वजनिक क्षेत्र	
1	रिहन्द जल विद्युत परियोजना	पिपरी (सोनभद्र)
2	ओबरा जल विद्युत केन्द्र	ओबरा (सोनभद्र)
3	माताटीला विद्युत गृह	झाँसी
4	शारदा जल विद्युत परियोजना	बनवासा (पीलीभीत)
5	गोविन्द बल्लभ सागर परियोजना	पिपरी (सोनभद्र)
	संयुक्त क्षेत्र	
6	टिहरी जल विद्युत परियोजना (2006)	टिहरी (उत्तराखण्ड) (उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश व केन्द्र सरकार की संयुक्त परियोजना)
7	मेजा ताप विद्युत परियोजना	मेजा (इलाहाबाद)
8	फतेहपुर ताप विद्युत परियोजना	फतेहपुर
9	ललितपुर ताप विद्युत परियोजना	ललितपुर
	निजी क्षेत्र-	
10	रिलायंस इण्डस्ट्रीज लिमिटेड परियोजना	दादरी (गौतमबुद्ध नगर)
11	रोजा ताप विद्युत परियोजना	शाहजहाँपुर
12	विष्णु प्रयाग जल विद्युत परियोजना	चमोली (उत्तराखण्ड)
13	श्रीनगर जल विद्युत परियोजना ट्रॉनिक सिटी विद्युत उत्पादन केन्द्र	श्रीनगर (पौढ़ी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड)
14	अनपरा 'सी' विद्युत परियोजना	ट्रॉनिक सिटी (गाजियाबाद में)
15	बारा ताप विद्युत गृह	अनपरा (सोनभद्र)
16	करछना ताप विद्युत गृह	बारा (इलाहाबाद)

उत्तर प्रदेश के कोयला आधारित बिजली संयत्र -

1. सिंगरौली - सोनभद्र

उत्तर प्रदेश

2. दादरी - गौतमबुद्धनगर
3. रिंहद - सोनभद्र
4. फिरोजगांधी ऊंचाहार - रायबरेली
5. टांडा - अम्बेडकर नगर
6. मेजा - इलाहाबाद

वैकल्पिक ऊर्जा विकास संस्थान की स्थापना वर्ष 1983 में की गयी थी।

11. परिवहन

सड़क परिवहन

उत्तर प्रदेश मे कुल 14 एक्सप्रेसवे है, कुछ प्रमुख निम्न है-

1.यमुना एक्सप्रेसवे : उत्तर प्रदेश का पहला एक्सप्रेसवे जो दिल्ली को आगरा से जोड़ता है। इस एक्सप्रेसवे को ताज एक्सप्रेसवे भी कहा जाता है। इसकी लम्बाई 165.5 किमी. है।

2.पूर्वांचल एक्सप्रेसवे : प्रधानमंत्री ने का उद्घाटन किया था। यह एक्सप्रेसवे उत्तर में पूर्वांचल एक्सप्रेसवे 2021 प्रदेश के नौ प्रमुख जिलों को कवर करता है। इन जिलों में गाज़ीपुर, मऊ, आजमगढ़, अम्बेडकर नगर, अयोध्या, सुल्तानपुर, अमेठी, बाराबंकी और लखनऊ शामिल हैं। इसकी लम्बाई 340 किमी. है।

3. बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे : बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे (Bundelkhand Expressway) का निर्माण UPEIDA द्वारा किया गया है। यह यूपी में सबसे कम समय में बनने वाले एक्सप्रेसवे में से एक है। इसका निर्माण 28 महीने में ही हो गया था। यह उत्तर प्रदेश के सात जिलों से होकर गुजरती है। इन जिलों में चित्रकूट, बांदा, महोबा, हमीरपुर, जालौन, औरैया और इटावा शामिल हैं। एक्सप्रेसवे दिल्ली मेरठ एक्सप्रेसवे से भी जुड़ा है। इसकी लम्बाई 296 किमी. है।

4.गंगा एक्सप्रेसवे : यूपी का सबसे लंबा एक्सप्रेसवे है। गंगा एक्सप्रेसवे एक ग्रीनफील्ड प्रोजेक्ट है। यह एक्सप्रेसवे मेरठ और प्रयागराज को जोड़ेगा। यह यूपी राज्य के लगभग 12 जिलों को कवर करेगा। इसकी लम्बाई 594 किमी. है।

GT(ग्रांड ट्रंक) रोड - ग्रैंड ट्रंक रोड, दक्षिण एशिया के सबसे पुराने एवं सबसे लम्बे मार्गों में से एक है। वर्तमान मे इसे **NH-19** कहा जाता है। दो सदियों से अधिक काल के लिए इस मार्ग ने भारतीय उपमहाद्वीप के पूर्वी एवं पश्चिमी भागों को जोड़ा है। यह हावड़ा के पश्चिम में स्थित बांगलादेश के चटगाँव से प्रारंभ होता है और लाहौर (पाकिस्तान) से होते हुए अफ़ग़ानिस्तान में काबुल तक जाता है। उत्तर प्रदेश में ग्रैंड ट्रंक रोड (जीटी रोड) **मथुरा** ज़िले से शुरू होती है. इसके बाद यह **आगरा, फिरोज़ाबाद, इटावा, कानपुर, फतेहपुर, प्रयागराज (इलाहाबाद), वाराणसी और मुगलसराय** से होते हुए बिहार में प्रवेश करती है

रेल परिवहन

- देश में कार्यरत वर्तमान 17 रेल जोनों में से 5 रेल जोनों की लाइनें उत्तर प्रदेश से गुजरती हैं, जो इस प्रकार हैं-उत्तर रेल, मध्य रेल, पश्चिम रेल, पूर्वोत्तर रेल तथा उत्तर-मध्य रेल। उपर्युक्त पाँच रेल जोनों में से दो के मुख्यालय उत्तर प्रदेश में हैं- (i) पूर्वोत्तर रेल (NER) का मुख्यालय गोरखपुर और उत्तर मध्य रेल (NSR) का मुख्यालय इलाहाबाद है। प्रदेश में विभिन्न जोनों के कुल 9 रेल मण्डल हैं, जो इस प्रकार हैं-

(i) उत्तर रेलवे के मुरादाबाद व लखनऊ मण्डल

(ii) पूर्वोत्तर रेलवे के-इज्जतनगर (बरेली), लखनऊ तथा वाराणसी मण्डल

(iii) पूर्वोत्तर मध्य रेलवे - मुगलसराय मण्डल

(iv) उत्तर-मध्य रेलवे-इलाहाबाद, आगरा तथा झाँसी मण्डल

- इन मण्डलों में सबसे छोटा मण्डल मुगलसराय है, जो देश का भी सबसे छोटा रेल मण्डल है।
- उत्तर प्रदेश में गोरखपुर रेलवे स्टेशन भारत का दूसरा सबसे लम्बा (1355.40 मी.) रेलवे स्टेशन है। (पहले नम्बर पर कर्नाटक का हुबली स्टेशन है, जिसकी लम्बाई 1507 मी. है।)

उत्तर प्रदेश

- उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में एक रेल कोच रिपेयर कारखाना स्थापित किया गया। इसी के बाद देश के तीसरे रेल कोच कारखाने की स्थापना 17 जनवरी, 2009 ई. में लालगंज (रायबरेली) में की गई।
- उत्तर प्रदेश में रेल सुरक्षा आयोग का मुख्यालय लखनऊ में स्थित है।
- उत्तर प्रदेश का रेल संग्रहालय वाराणसी में स्थित है।
- उत्तर प्रदेश में रेलवे परीक्षा की भर्ती हेतु दो रेलवे बोर्ड, इलाहाबाद एवं गोरखपुर में हैं।
- उत्तर प्रदेश में रेलमार्गों की कुल लम्बाई 8800 किमी. है।

वायु परिवहन

- भारत में वायु परिवहन का शुभारम्भ 1911 ई. में इलाहाबाद से नैनी के बीच हुआ था। भारत में नागरिक उड्डयन विभाग की स्थापना 1927 ई. में की गयी थी। वायु परिवहन का राष्ट्रीयकरण 1953 ई. में किया गया और एयर इण्डिया और इण्डियन्स एयरलाइन्स नामक दो निगमों की स्थापना की गयी।
- एयर इण्डिया विदेशों के लिए सेवाएँ उपलब्ध करता है। इसका मुख्यालय मुम्बई में है।
- इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय उड़ान अकादमी की स्थापना रायबरेली के फुर्सतगंज में की गई।
- उत्तर प्रदेश के गौतमबुद्ध नगर जिले में एक अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा (ताज अन्तर्राष्ट्रीय हवाई) का निर्माण किया गया है।

उत्तर प्रदेश के हवाई अड्डे

क्र0	हवाई अड्डे का नाम	स्थान
1.	चौधरी चरण सिंह अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा (अमौसी हवाई अड्डा)	लखनऊ
2.	लाल बहादुर शास्त्री अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा (बाबतपुर हवाई अड्डा)	वाराणसी
3.	कुशीनगर अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	कुशीनगर
4.	ताज अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा (जेवर हवाई अड्डा) (**निर्माणाधीन**)	ग्रे. नोएडा
5.	मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा (**निर्माणाधीन**)	अयोध्या
6.	खेरिया हवाई अड्डा	आगरा
7.	फुरसतगंज हवाई अड्डा	रायबरेली
8.	सरसावा हवाई अड्डा	सहारनपुर
9.	गोरखपुर हवाई अड्डा	गोरखपुर
10.	बरेली हवाई अड्डा	बरेली
11.	झाँसी हवाई अड्डा	झाँसी
12.	बमरौली हवाई अड्डा	इलाहाबाद
13.	हिण्डन हवाई अड्डा	गाजियाबाद
14.	चकेरी हवाई अड्डा	कानपुर
15.	डॉ. अम्बेडकर हवाई अड्डा	मेरठ

- भारत में सर्वप्रथम हवाई डाक सेवा 18 फरवरी, 1911 ई. को इलाहाबाद से नैनी के मध्य प्रारम्भ हुई थी।
- जल्द ही उ0प्र0 5 अन्तर्राष्ट्रीय वाला पहला राज्य बन जायेगा।
- भारत में पिन कोड प्रणाली की शुरुआत 1972 ई. में की गई थी।
- भारत में टेलीग्राफ सेवा का प्रारम्भ मार्च, 1854 ई में आगरा से कोलकाता के मध्य हुआ।

- में उ.प्र में नागरिक उड्ड्यन प्रशिक्षण केन्द्र बमरौली (इलाहाबाद) में स्थित है।
- आदित्य बिड़ला ग्रुप ने म्योरपुर (सोनभद्र) में निजी हवाई अड्डा विकसित किया है।
- झाँसी हवाई अड्डा भारतीय सेना का हवाई अड्डा है। भारतीय वायुसेना का हवाई अड्डा बक्शी का तालाब (लखनऊ) में स्थित है।

जल परिवहन

- उत्तर प्रदेश में जल परिवहन सुविधा गंगा, यमुना, गोमती, तथा घाघरा नदियों में उपलब्ध है।
- गंगानदी में इलाहाबाद से हल्दिया (प. बंगाल) तक के मार्ग को राष्ट्रीय जलमार्ग नम्बर 1 घोषित किया गया है। इसकी कुल लम्बाई 1620 किमी. है। यह देश का सबसे लम्बा राष्ट्रीय जलमार्ग है।

12. प्रमुख शिक्षण संस्थान

- उत्तर प्रदेश का सबसे पुराना विश्वविद्यालय **इलाहाबाद विश्वविद्यालय** (1887) है।
- प्रथम विकलांग विश्वविद्यालय जगदगुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय चित्रकूट मे स्थापित (2001)।

केन्द्रीय विश्वविद्यालय (कुल 06)

- इलाहाबाद विश्वविद्यालय (2005 से केन्द्रीय)
- काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़
- डॉ भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ
- राजीव गांधी नेशनल एविएशन यूनिवर्सिटी, रायबरेली
- रानी लक्ष्मीबाई कृषि विश्वविद्यालय, झांसी

राज्य विश्वविद्यालय

- लखनऊ विश्वविद्यालय
- डॉ भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा
- पं. दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर
- चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
- छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर
- डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद
- ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

राज्य मुक्त विश्वविद्यालय

- राजर्षि पुरुषोत्तम टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

राज्य कृषि विश्वविद्यालय (कुल 05)

- चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर
- आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, अयोध्या
- सरदार बल्लभभाई पटेल कृषि विश्वविद्यालय, मेरठ
- सैम हिगिनबॉटम कृषि विश्वविद्यालय (डीम्ड विश्वविद्यालय, नैनी (इलाहाबाद)
- बांदा कृषि एवं प्रौद्यौगिकी विश्वविद्यालय, बांदा

डीम्ड विश्वविद्यालय

- दयालबाग शिक्षा संस्थान, आगरा
- पशु चिकित्सा अनुसन्धान संस्थान, इज्जतनगर (बरेली)
- भातखण्डे हिन्दुस्तानी सगीत महाविद्यालय, लखनऊ

अन्य

- कन्हैयालाल मणिकलाल केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा
- डॉ. अम्बेडकर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, कानपुर
- गुरू गोविन्द सिंह स्पोर्टस कॉलेज, लखनऊ

PA.ONE

उत्तर प्रदेश

13.प्रमुख संस्थान

	संस्थान	स्थान
1	सेण्ट्रल ड्रा रिसर्च इण्स्टीट्यूट	लखनऊ
2	आयुर्वेदिक रिसर्च सेण्टर	लखनऊ
3	इण्डियन शुगरकेन रिसर्च इन्स्टीट्यूट	लखनऊ
4	सेण्ट्रल मैंगो रिसर्च इन्स्टीट्यूट	लखनऊ
5	नेशनल बोटेनिकल रिसर्च इन्स्टीट्यूट	लखनऊ
6	नेशनल बोटेनिकल इन्स्टीट्यूट	लखनऊ
7	बीरबल साहनी इन्स्टीट्यूट ऑफ पोलियो बॉटनी	लखनऊ
8	इण्डस्ट्रियल टॉक्सीलॉजिकल रिसर्च सेण्टर	लखनऊ
9	इन्दिरा गांधी नक्षत्रशाला	लखनऊ
10	बायो टेक्नोलॉजी पार्क	लखनऊ
11	उ.प्र. कृषि अनुसन्धान परिषद्	लखनऊ
12	छत्रपति शाहूजी चिकित्सा वि.वि.	लखनऊ
13	राजकीय फल संरक्षण एवं डिब्बा बंदी संस्थान	लखनऊ
14	राज्य आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण	लखनऊ
15	उत्तर प्रदेश निर्यात निगम	लखनऊ
16		
17	मोतीलाल बाल संग्रहालय	लखनऊ
18	पिकअप भवन	लखनऊ
19	उत्तर प्रदेश वित्तीय निगम	कानपुर
20	इण्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ शुगर टेक्नोलॉजी	कानपुर
21	दलहन अनुसन्धान संस्थान	कानपुर
22	सेण्ट्रल टेक्सटाइल्स इन्स्टीट्यूट	कानपुर
23	इण्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी	कानपुर
24	भारतीय चमड़ा रँगाई एवं जूता सस्थान	कानपुर
25	चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौ.वि.वि	कानपुर
26	वन अनुसन्धान संस्थान	कानपुर
27	जे.के. कैंसर संस्थान	कानपुर
28	हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स निगम लिमिटेड	कानपुर
29	राजकीय चर्म संस्थान	कानपुर
30	जवाहर नक्षत्रशाला	इलाहाबाद
31	भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT-प्रथम)	इलाहाबाद
32	जी.बी. पन्त सामाजिक विज्ञान अनुसन्धान सस्थान	इलाहाबाद
33	इण्डियन पल्सेज रिसर्च इन्स्टीट्यूट (हापुड़)	गाजियाबाद
34	आलू अनुसन्धान केन्द्र (बाबूगंज)	गाजियाबाद
35	सेण्ट्रल पोटेटो रिसर्च सेण्टर	मेरठ

उत्तर प्रदेश

36	इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय उड़ान अकादमी	रायबरेली
37	नेशनल रिसर्च सेण्टर फॉर मीट (इज्जतनगर)	बरेली
38	स्कूल ऑफ पेपर टेक्नोलॉजी	सहारनपुर
39	राष्ट्रीय हिन्दी सग्रहालय	आगरा
40	आलू निर्यात जोन	आगरा
41	गोरखपुर नक्षत्रशाला (रामगढ़)	गोरखपुर
42	मदन मोहन मालवीय प्रौद्यौगिकी विश्वविद्यालय	गोरखपुर
43	रामपुर नक्षत्रशाला	रामपुर
44	नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विवि	अयोध्या
45	उ.प्र. गन्ना अनुसन्धान कौंसिल	शाहजहाँपुर
46	राजकीय चीनी मिट्टी पात्र विकास केन्द्र	चुना (मिर्जापुर) व खुर्जा (बुलन्दशहर)
47	वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान	नोएडा
48	भारतीय सूचना प्रौद्यौगिक संस्थान	प्रयागराज
49	भारतीय अन्न भण्डारण प्रबन्धन एवं अनुसंधान संस्थान	हापुड़
50	डॉ बी.आर. अम्बेडकर पुलिस अकादमी	मुरादाबाद

1	लोहिया पार्क	लखनऊ
2	श्री कांशीराम स्मारक पार्क	लखनऊ
3	शान-ए-अवध संकुल	लखनऊ
4	बुद्धा थीम पार्क	सारनाथ, वाराणसी
5	चन्द्रोदय मंदिर (इस्कान द्वारा)	वृन्दावन
6	नालेज पार्क	ग्रेटर नोएडा
7	इको नालेज पार्क	इलाहाबाद
8	परफ्यूम पार्क	कन्नौज
9	डिस्कवरी पार्क	अमेठी
10	लेदर टेक्नोलॉजी पार्क	कानपुर व बंथरा (उन्नाव)
11	साइंस पार्क	संडीला, हरदोई
12	ट्रोनिका सिटी	गाजियाबाद
13	निकिडा सिटी	कानपुर व उन्नाव के बीच
14	प्लास्टिक सिटी	कानपुर देहात व दिबियापुर (औरैया) के बीच
15	साइबर सिटी	कानपुर
16	इलेक्ट्रानिक सिटी	नोएडा व आगरा
17	टॉय सिटी	ग्रेटर नोएडा
18	कनक भवन	अयोध्या
19	कामदगिरी पर्वत	चित्रकूट
20	सेमीकण्डक्टर पार्क	गौतमबुद्धनगर

14. कला एवं संस्कृति सम्बन्धी संस्था

उत्तर प्रदेश में सांस्कृतिक रूप से शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व और समन्वय की परम्परा रही है। यहाँ हिन्दू, जैन, सिख, इस्लाम एवं सनातन सभी धर्मों के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और धार्मिक जीवन को प्रभावित एवं समृद्ध करते रहे। प्रदेश की सांस्कृतिक परिधि के अन्तर्गत अवध, ब्रज, भोजपुरी, बुन्देलखण्ड एवं रुहेलखण्ड आदि क्षेत्र स्थित हैं। इन क्षेत्रों के ऐतिहासिक, पुरातात्त्विक एवं कलात्मक गतिविधि के संरक्षण, प्रदर्शन, अभिलेखीकरण, प्रकाशन, प्रमाणीकरण और अध्ययन हेतु उत्तर प्रदेश सरकार ने 1957 ई. में **'संस्कृति विभाग'** की स्थापना की। इस विभाग के अन्तर्गत कुछ प्रमुख संस्थाएँ कार्यशील हैं, जो इस प्रकार हैं-

उत्तर प्रदेश के संगीतकला संस्थान

संस्थान	स्थापना वर्ष
भातखण्डे संगीत संस्थान	- 1926 (लखनऊ)
राज्य ललित कला अकादमी	- 1962 (लखनऊ)
भारतेन्दु नाट्य अकादमी	- 1975 (लखनऊ)
उत्तर प्रदेश संगीत नाट्य अकादमी	- 1963 (लखनऊ)
राष्ट्रीय कत्थक संस्थान	- 1988 (लखनऊ)
निराला आर्ट गैलीरी	- इलाहाबाद
जनजाति एवं लोक कला संस्कृति संस्थान	- 1996 (लखनऊ)
कला एवं शिल्प महाविद्यालय	- 1911 (लखनऊ)
राष्ट्रीय कथक संस्थान	- 1988-89 (लखनऊ)
राज्य पाण्डुलिपि पुस्तकालय	- इलाहाबाद

भातखण्डे संगीत संस्थान (लखनऊ) - 15 जुलाई, 1926 को पं. विष्णु नारायण भातखण्डे जी के अथक प्रयासों से मेरिस कॉलेज ऑफ हिन्दुस्तानी म्यूजिक की नींव पड़ी। इस संगीत संस्थान से गायन, स्वर वाद्य, ताल-वाद्य, नृत्य इन चारों विधाओं में बीपीए, एमपीए एवं पीएचडी की डिग्री तथा अन्य संगीत क्षेत्र में डिप्लोमा प्रदान किये जाते हैं।

राज्य ललित कला अकादमी (लखनऊ)- 8 फरवरी, 1962 को उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संस्कृति विभाग के अधीनस्थ राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ की स्थापना की। इस संस्था का उद्देश्य कलाकारों को प्रोत्साहित कर कला के प्रति प्रोन्नति एवं उच्च शिक्षा प्रदान करना है।

भारतेन्दु नाट्य अकादमी (लखनऊ) - अगस्त, 1975 ई. में हिन्दी भाषा प्रान्तों में प्रतिभावान आकांक्षी युवक-युवतियों को नाट्यकला में प्रशिक्षण देने के लिए भारतेन्दु नाट्य अकादमी, लखनऊ की स्थापना की गई थी।

उ.प्र. संगीत नाटक अकादमी (लखनऊ)- 13 नवम्बर, 1963 को उत्तर प्रदेश के लखनऊ में संगीत नाटक अकादमी की स्थापना की गई। यह अकादमी संगीत, नृत्य, नाटक, लोक संगीत, लोक नाट्य की परम्पराओं के प्रचार-प्रसार, संवर्द्धन एवं परिरक्षण का कार्य करती है।

राष्ट्रीय कत्थक संस्थान (लखनऊ)- इस संस्थान की स्थापना संस्कृति विभाग के अन्तर्गत 1988-89 ई. में की गई थी। राष्ट्रीय कत्थक संस्थान का उद्देश्य राष्ट्रीय स्तर पर कत्थक के विविध घरानों की परम्पराओं का

अभिलेखीकरण, युवा प्रतिभाओं को प्रोत्साहन, वरिष्ठ कलाकारों का संरक्षण एवं कत्थक नृत्य का संवर्द्धन तथा कत्थक संग्रहालय की स्थापना है।

जनजाति एवं लोककला संस्कृति संस्थान (लखनऊ)- उ.प्र. के जनजातीय एवं लोक संस्कृति के संरक्षण, संवर्द्धन एवं प्रदर्शन हेतु जनजाति एवं लोक कला संस्कृति संस्थान की स्थापना सन् 1996 में की गयी है जिसके द्वारा लोक संस्कृति की लुप्त होती विधाओं को मंच प्रदान करना, इससे सम्बन्धित सर्वेक्षण, दस्तावेजीकरण आदि का महत्त्वपूर्ण कार्य किया जाता है।

- उ.प्र. सांस्कृतिक केन्द्र इलाहाबाद मे स्थित है।
- रामायण म्यूजियम - अयोध्या
- मुगल म्यूजियम - आगरा
- उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान - लखनऊ (1976)

प्रमुख धार्मिक स्थल

- भीतरगांव मन्दिर - कानपुर
- बटेश्वर नाथ मंदिर, आगरा (100 से अधिक मंदिरों का समूह)
- सारनाथ – धमेक स्तूप
- अयोध्या – राम जन्मभूमि मंदिर
- काशी विश्वनाथ मंदिर, वाराणसी
- श्री कृष्ण जन्मभूमि मंदिर, मथुरा
- शीतला देवी मंदिर, लखनऊ
- वृन्दावन में बांकेबिहारी मंदिर
- तुलसी मानस मंदिर, वाराणसी
- प्रेम मंदिर, वृन्दावन
- जेके मंदिर, कानपुर
- इस्कॉन मंदिर, वृन्दावन
- भारतमाता मंदिर, वाराणसी
- बांके बिहारी मंदिर, वृंदावन
- पागलबाबा मंदिर, वृंदावन

उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश के प्रमुख पर्यटन स्थलों की सूची

स्थल	जिला	स्थल	जिला
वृंदावन के मंदिर	मथुरा	ताजमहल	आगरा
भगवान वराह मंदिर	सोरो(कासगंज)	खानकाह रशीदिया	मैनपुर
गोला गोकर्णनाथ मंदिर	लखीमपुर खीरी	रूमी दरवाजा	लखनऊ
चक्रतीर्थ नैमिषराण्य	सीतापुर	आनंद भवन	प्रयागराज
बावनी इमली शहीद स्थल	फतेहपुर	कड़कशाह बाबा की मजार	कौशांबी
शहीद स्थल छावनी	बस्ती	फांसी इमली शहीद स्थल	प्रयागराज
कनक भवन	अयोध्या	जेके मंदिर	कानपुर नगर
सप्तमातृका की प्रतिमा	कन्नौज	दिगंबर जैन मूर्तियां	इटावा
शुक्ल तालाब	कानपुर देहात	गोरखनाथ मंदिर	गोरखपुर
सीता समाहित स्थल	भदोहीस संत रविदा) (नगर	बौद्ध स्तूब	कुशीनगर एंव सिद्धार्थ नगर
कामदगिरी पर्वत	चित्रकूट	कालिंजर किला	बांदा
बाबा सोमनाथ जी की मंदिर	देवरिया	रेणुकेश्वर महादेव मंदिर	सोनभद्र
अरगा पार्वती मंदिर	गोंडा	देवीपाटन	बलरामपुर
यज्ञशाला	बागपत	महर्षि दधीची आश्रम	सीतापुर
सीतावुंड घाट	सुल्तानपुर	चौरासी गुंबद	कालपी(जालौन)
शुक्रताल का प्रचीन शिव मंदिर	मुजफ्फरनगर	महर्षि दुर्वसा आश्रम	प्रयागराज
लॉर्ड कार्नवालिस का मकबरा	गाजीपुर	दानतीर्थ(हस्तिनापुर)	मेरठ
श्री सनातन धर्म मंदिर	गौतमबुद्ध नगर	विक्टोरिया हॉल घंटाघर	हरदोई
माथाकुंअर बुद्ध प्रतिमा	कुशीनगर	दशावातार मंदिर	देवगढ़(ललितपुर)
मकरबाई मंदिर	महोबा	लाडली जी(राधा मंदिर)	मथुरा
भीतरगांव गुप्तकालीन मंदिर	कानपुर	भारद्वाज आश्रण एवं अक्षयवट	प्रयागराज
शाकंभरी देवी मंदिर	सहारनपुर	सलामत शाह की मजार	बाराबंकी
अशफाक उल्ला की मजार	शाहजहांपुर	व्यास टीला एवं नरसिंह टीला	जालौन
चाइना मंदिर	श्रावस्ती	रानी महल	झांसी
दाऊजी मंदिर	मथुरा	मुगल घाट	फर्रुखाबाद
तुलसी स्मारक	बांदा	जायसी स्मारक	रायबरेली
इमामबाड़ा एवं छतर मंजिल	लखनऊ	लाल दरवाजा मस्जिद	जौनपुर
कपिल मुनि आश्रम, रामेश्वरधाम मंदिर एवं भेदवुंड	फर्रूखाबाद	शेख सलीम चिश्ती का मकबरा	फतेहपुर सीकरी(आगरा)
सैयद शाह अब्दुल रज्जाक की दरगाह	बाराबंकी	संत कबीर निर्वाण स्थल	मगहर, संत कबीर नगर
हाजी वारिस अली की मजारदेवा) (शरीफ	बाराबंकी	सैयद सालार मसूद गाजी की दरगाह	बहराइच
क्षेमकली देवी मंदिर, पद्मवती सती मंदिर, जयचंद का किला और हाजी शरीफ दरगाह	कन्नौज	भरत वुंड	अयोध्या

15. पत्रकारिता

- हिन्दी पत्रकारिता की प्रथम किरण **बंगाल** में प्रस्फुटित हुई। हिन्दी का प्रथम पत्र 30 मई, 1826 ई. को कोलकाता से निकला जिसका नाम **'उदत्त मार्तण्ड'** था। यह साप्ताहिक समाचार-पत्र था। इसके सम्पादक पं. जुगुल किशोर कानपुर के रहने वाले थे। जबकि उत्तर प्रदेश से प्रकाशित पत्रों में 'बनारस अखबार' पहला हिन्दी साप्ताहिक था जिसको हिन्दी भाषी प्रान्तों में राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द' ने 1845 में प्रकाशित करवाया था। इसके सम्पादक श्री गोविन्द रघुनाथ थत्ते थे।
- भारतेन्दु ने काशी से 'कविवचन सुधा' नामक मासिक पत्र का प्रकाशन 15 अगस्त, 1867 ई. में आरम्भ करके हिन्दी पत्रकारिता में नये युग का सूत्रपात किया।
- उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले के निवासी सदासुख लाल के सम्पादकत्व में 'उर्दू' का पहला अखबार 'जामे जहाँनुमा' मार्च, 1822 में कोलकाता से प्रकाशित हुआ।
- "किस्सा राधा कन्हैया" तथा "रहस रास" के लेखक नवाब वाजिद अली शाह है। इन्हे ठुमरी संगीत विधा के जनक के रूप मे भी जाना जाता है।
- लोकप्रिय पत्रिका "कल्याण" गोरखपुर से प्रकाशित होती है।
-

16. चित्रकला, मूर्तिकला, लोककला, नृत्य एवं संगीत

- उत्तर प्रदेश में मिर्जापुर के मानिकपुर, लिखनियान्दरी और सोनभद्र की गुफाओं से प्रागैतिहासिक चित्रकारी के कुछ नमूने प्राप्त हुए हैं।
- मुगलकाल में चित्रकला की नींव हुमायूँ द्वारा रखी गयी थी। वह फारस से ख्वाजा अब्दुस्समद और सैयद अली नामक चित्रकारों को अपने साथ भारत लाया था। अब्दुस्समद के चित्र 'गुलशन चित्रावली' में संकलित हैं।
- मुगल सम्राट अकबर ने चित्रकारी के लिए अलग विभाग खोला था। आइने-ए-अकबरी में वर्णित प्रसिद्ध चित्रकारों में अब्दुस्समद, सैयद अली, दसवन्त, बसावन, महेश, लालमुकुन्द, सावलदास आदि प्रमुख हैं।
- जहाँगीर का शासनकाल मुगल चित्रकला का स्वर्ण काल था। इसने आगरा में एक चित्रशाला बनवायी थी। मुगल सम्राट औरंगजेब के शासन काल में चित्रकारों को संरक्षण मिलना बन्द हो गया था तथा फिर भी चित्रकार ईश्वरी प्रसाद को मुगल दरबार में संरक्षण प्राप्त था।
- लखनऊ में **कला एवं शिल्प महाविद्यालय** की स्थापना 1911 में की गयी। इस महाविद्यालय को 1973 से लखनऊ विश्वविद्यालय के एक संकाय के रूप में मान्यता प्राप्त है।
- वाराणसी में **भारतीय कला परिषद्** की स्थापना 1920 में तथा 1950 ई. में **बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय** में 'भारत कला' भवन की स्थापना की गई। जो वर्तमान में भारत के बड़े चित्रकला संग्रहालयों में से एक है।
- **लखनऊ नगर निगम आर्ट गैलरी** की स्थापना 1949 में की गई थी। लखनऊ में ही **ललित कला अकादमी** की स्थापना 1962 में की गई थी।

संगीत कला

- उत्तर प्रदेश में 'संगीत कला' का शुभारम्भ वैदिककाल से प्रारम्भ होता है। उपनिषदों में सामवेद के गायन, संगीत एवं वाद्यों का वर्णन मिलता है।
- भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र की रचना की, जिसे संगीत की बाइबिल कहा जाता है।
- छठी से बारहवीं शताब्दी तक राज्य में संगीत के क्षेत्र के कश्यप, शार्दूल, मांतगम, दन्तिल, हरिपाल, अभिनवगुप्त आदि का नाम संगीत के क्षेत्र में उल्लेखनीय है।
- अमीर खुसरो का जन्म 1223 ई. में उत्तर प्रदेश के पटियाली (एटा) गाँव में हुआ था। इन्होंने ईरानी-फारसी संगीत रागों में भारतीय प्रचलित रागों का मिश्रण करके अनेक रागों को जन्म दिया।
- मध्यकाल में विख्यात कवि संगीतज्ञ प्रशासक अमीर खुसरो ने सितार, तबला का आविष्कार किया। यह वीणा और पखावज के नये संस्करण थे। खुसरो ने उस समय देश में प्रचलित ध्रुवपद गायन शैली में ईरानी शैली का मिश्रण कर हिन्दुस्तानी संगीत में ख्याल तथा अनेक प्रवृत्तियाँ समायोजित कीं।
- बल्लभाचार्य व उसके पुत्र विठ्ठलनाथ ने कृष्ण लीला गान सम्प्रदाय के रूप में अष्टछाप कवियों की स्थापना की। अष्टछाप कवियों में शामिल थे-सूरदास, नन्ददास, कुम्भनदास, परमानन्ददास, चतुर्भुजदास, छीतस्वामी, गोविन्द स्वामी एवं कृष्ण दास। (ट्रिक- सुकृकुप गोछीनच)
- स्वामी हरिदास का जन्म हरिदासपुर ग्राम (अलीगढ़) में हुआ था, लेकिन इन्होंने अपना अधिकांश जीवन वृन्दावन में व्यतीत किया।
- उत्तर प्रदेश के वृन्दावन में प्रत्येक वर्ष स्वामी हरिदास संगीत सम्मेलन व ध्रुवपद में आयोजन किया जाता है। स्वामी हरिदास को ध्रुवपद-धमार राम का प्रवर्तक तथा मन्दिरों में ध्रुवपद गायन द्वारा अर्चना पद्धति का भी प्रवर्तक माना जाता है।
- सुविख्यात चित्र **सत्यम् शिवम् सुन्दरम्** की रचनी शिवनन्दन नौटियाल ने किया था।

- स्वामी हरिदास ने **तानसेन को 'दीपक राग'**, **बैजू बावरा को 'मेघ राग'** तथा **गोपाल नायक को 'माल कौंस राग'** में सिद्धि शक्ति दी थी।
- जौनपुर के शासक सुल्तान हुसैन शर्की ने कव्वाली की धुन पर बड़ा ख्याल का प्रवर्तन किया और **टप्पा शैली** का भी प्रचलन किया।
-
- **शास्त्रीय नृत्य -** उत्तर प्रदेश का प्रमुख शास्त्रीय नृत्य कत्थक है। वाजिद अली शाह के शासनकाल मे इसकाक विशेष विकास हुआ। इस नृत्य का उन्नयक ठाकुर प्रसाद को माना जाता है। जिसके प्रमुख कलाकार लच्छू महाराज, बिरजू महाराज, शम्भू महाराज, अच्छन महाराज, कालका महाराज, सितारा देवी तथा गोपीचंद्र चौबे आदि है।

कत्थक नृत्य शैली से सम्बन्धित प्रमुख घराने-

- जयपुर घराना - युद्ध शैली एवं आक्रमकता का प्रदर्शन
- लखनऊ घराना - संस्कृति, रोमांश, लोकाचार एवं श्रृंगार प्रधान
- बनारस घराना - आध्यात्मिक पहलुओं पर अत्यधिक केन्द्रित
-
- **प्रमुख व्यक्तियों से सम्बन्धित प्रमुख स्थान-**

88 हजार ऋषियों की तपोभूमि : नैमिषरण (सीतापुर)
संत सलामतशाह की मजार : बाराबंकी
हाजी वारिस अलीशाह की मजार : देवा, बाराबंकी
सैयदशाह अब्दुल रज्जाक की मजार : बांसा, बाराबंकी
निजामुद्दीन औलिया : बदायूं
बीरबल (महेशदास) : काल्पी, जालौन
तुलसीदास : राजापुर (चित्रकूट)
अमीर खुसरो : एटा
मिर्जा गालिब : आगरा
जोश : मलिहाबाद
फिराक : इलाहाबाद
जिगर : मुरादाबाद
चक्रबस्त : लखनऊ
हरिदास : हरीदासपुर, अलीगढ़
टोडरमल : सीतापुर
अबुलफजल : आगरा
तानसेन : ग्वालियर, मध्य प्रदेश
मिर्जा गालिब : आगरा
चन्द्रशेखर : उन्नाव
कबीर : इलाहाबाद
सूरदास : सीही, मथुरा
रैदास : वाराणसी
रानी लक्ष्मीबाई : वाराणसी

उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश के प्रमुख संगीत घराने

- **लखनऊ घराना-** इस घराने की नींव उस्ताद बख्शु खाँ ने रखी थी। इसे पूरब घराना भी कहा जाता है। अवध के नवाब वाजिद अलीशाह एक संगीतज्ञ एवं कला प्रेमी थे। उनके शासन काल को अवध की कला की दृष्टि से स्वर्ण युग माना गया। उनके दरबार में बिन्दासीन, पं. सखाराम, पं. अयोध्या प्रसाद, कोदत सिंह प्रमुख पखावजी थे। नवाब वाजिद अलीशाह ने 'अख्तर प्रिया' और बिन्दादीन ने 'सनदपिया' नाम से ठुमरी की बन्दिशे तैयार की। इस घराने के मियाँ गुलाम नबी शैरी ने टप्पा शैली का प्रवर्तन किया। इस घराने के लच्छू महाराज, बिरजू महाराज, शम्भू महाराज, अच्छन महाराज आदि ने कत्थक शैली को नयी दिशा दी।
- यह घराना ख्याल व ध्रुवपद गायन के लिए प्रसिद्ध रहा है। खुर्शिद अली खाँ लखनऊ ख्याल गायकी के पितामह माने जाते हैं। गजल गायकी की बेगम अख्तर इसी घराने की थीं।
- **बनारस घराना-** इस घराने के गायक ख्याल के साथ- साथ ठुमरी-टप्पा, कजरी-चैती, धुपद-धमार, मजन-गजल में भी पारंगत थे, परन्तु इस घराने को ठुमरी गायकी में अधिक प्रसिद्धि मिली। इस घराने के प्रमुख गायकों में प दिलाराम मिश्र, शिवदास प्रयागजी, बख्तावर मिश्र, गिरिजा देवी, सितारा देवी, सिद्धेश्वरी देवी, हरिशकर मिश्र, राजन- साजन मिश्र, बड़े रामदास मिश्र, ठाकुर प्रसाद मिश्र आदि है।
- पं. रविशंकर व मुस्ताक अली खाँ सितार, श्रीमती एन. राजम वायलिन तथा बिस्मिल्ला खाँ व मुमताज खान शहनाई वादन से जुड़े इस घराने के प्रमुख वादक कलाकार 12
- **आगरा घराना-** इस घराने की शुरुआत अकबर के दरबारी गायक सुजान खों से मानी जाती है। कुछ लोग इस घराने की उत्पत्ति अलखदास-मलूकदास से मानते हैं। इस घराने के गायक ख्याल, धुपद, धमार तथा ठुमरी में निपुण थे।
- इस घराने के गायकों में पण्डित विश्वम्भरदीन, अता हुसैन खाँ, स्वामी बल्लभदास, जगन्नाथ, बुवा पुरोहित उर्फ गुवीदास, गोविन्द राव टेम्बे, सी आर व्यास, दीपली नाग, मदुरै रामास्वामी, युनुस हुसैन खों, अमानत अली आदि प्रमुख थे।
- **फतेहपुर सीकरी घराना-** इस घराने की शुरुआत मुगल बादशाह जहाँगीर के काल में दो भाइयों यैनू खाँ और जॉयवर खाँ से मानी जाती है। इस घराने के प्रमुख गायको में दुल्हे खाँ, गुलाम रसूल खाँ, छोटे खॉ, सैयद खाँ, घसीट खाँ आदि है। यह घराना ध्रुपद व ख्याल गायकी के लिए जाना जाता है।
- **रामपुर घराना-** इस घराने की स्थापना नेमत खाँ 'सदारंग' ने की थी। इस घराने को अमीर खुसरो ने सर्वोच्च शिखर पर पहुँचा दिया था। यह घराना ख्याल गायकी से सम्बन्धित है। इस घराने के प्रमुख गायकों में उस्ताद वजीर खाँ, उस्ताद नजीर खाँ, उस्ताद इनायक हुसैन खाँ, उस्ताद अमीर खाँ, उस्ताद बहादुर आदि प्रमुख हैं। देश ने संगीत क्षेत्र का सर्वप्रथम सम्मान 'रामपुर घराना' को प्रदान किया।

उत्तर प्रदेश के प्रमुख संगीतज्ञ

- **तबला वादक-** प. राम सहाय, किशन महाराज, गुदई महाराज, वाजिद हुसैन खॉ, शरद महाराज, कण्ठे महाराज, पं. रामी मिश्र, प, सामता प्रसाद मिश्र, बख्शूर खाँ।
- **सितार वादक-** पं. रविशंकर, गुलाम मुहम्मद, रहीम सेन, करवत अली, इलियास खाँ, हसन खाँ, रजा खाँ।
- **शहनाई वादक-**उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ, मुमताज खान ।
- **बाँसुरी वादक-** पं. हरिप्रसाद चौरसिया, रघुनाथ सेठ।
- **सारंगी वादक-** पं. गोपाल जी मिश्र, नजीर खाँ, अली खाँ ।
- **ठुमरी गायन-** गिरिजा देवी, बिन्दादीन।

प्रदेश के लोकनृत्य (नाट्य कला)

उत्तर प्रदेश

- **धुबिया नृत्य-** यह पूर्वांचल क्षेत्र में धोबी समुदाय द्वारा किया जाने वाला नृत्य है।
- **चरकुला नृत्य-** ब्रज क्षेत्र के निवासियों द्वारा बैलगाड़ी अथवा रथ के पहिये पर अनेक घड़े रखकर यह नृत्य किया जाता है।
- **करमा नृत्य-** सोनभद्र व मिर्जापुर जिले में आदिवासी लोगों द्वारा यह नृत्य किया जाता है।
- **धुरिया नृत्य-** बुन्देलखण्ड के प्रजापति (कुम्हार) लोग इस नृत्य को स्त्री का वेश धारण करके करते हैं।
- **छपेली नृत्य-** यह नृत्य एक हाथ में रूमाल तथा दूसरे हाथ में आईना लेकर करते हैं।
- **नटवरी नृत्य-** यह नृत्य पूर्वांचल क्षेत्र के अहीरों द्वारा किया जाता है। यह नृत्य बक्कारे के सुरों पर किया जाता है।
- **राई नृत्य-** यह नृत्य बुन्देलखण्ड की महिलाओं द्वारा किया जाता है। यहाँ की महिलाएँ यह नृत्य कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर करती हैं।
- **पाई डण्डा नृत्य-** यह नृत्य बुन्देलखण्ड के अहीरों द्वारा किया जाता है। यह नृत्य गुजरात के डांडिया नृत्य के समान है।
- **कार्तिक नृत्य-** यह कार्तिक माह में बुन्देलखण्ड क्षेत्र में नर्तकों द्वारा श्रीकृष्ण तथा गोपी बनकर किया जाने वाला नृत्य है।
- **छोलिया नृत्य-** प्रदेश के राजपूतों में विवाह के अवसर पर तलवार और ढाल लेकर किये जाने वाले नृत्य को छोलिया नृत्य कहते हैं।
- **जोगिनी नृत्य-** यह नृत्य विशेषकर रामनवमी के त्यौहार पर किया जाता है। यह नृत्य साधु वेशधारी स्त्री-पुरुषों द्वारा किया जाता है।
- **शौरा नृत्य-** शौरा नृत्य बुन्देलखण्डी किसानों द्वारा फसल काटने की खुशी में किया जाता है।
- **धीवर नृत्य-** यह नृत्य कहार जाति द्वारा अनेक शुभ अवसरों पर किया जाता है।
- **पासी नृत्य-** पासी जाति के लोगों द्वारा यह नृत्य किया जाता है।
- **ख्याल नृत्य-** यह नृत्य बुन्देलखण्ड क्षेत्र में पुत्र जन्मोत्सव के अवसर पर रंगीन कागजों तथा बाँसों की सहायता से मन्दिर बनाकर किया जाता है।
- **कलाबाजी नृत्य-** यह नृत्य अवध क्षेत्र के लोगों द्वारा किया जाता है। इसमें नर्तक 'मोरबाजा' लेकर कच्ची घोड़ी पर बैठकर नृत्य करते हैं।
- **नौटंकी-** उत्तर प्रदेश का सर्वाधिक प्रचलित लोक नृत्य नौटंकी है। हाथरसी तथा कानपुरी नाट्य शैलियों में संवाद व गायन के प्रस्तुतीकरण को नौटंकी कहते हैं।
- **दीपावली नृत्य-** यह दीपावली के शुभ अवसर पर बुन्देलखण्ड के अहीर जाति के नर्तकों द्वारा किया जाने वाला खेल जैसा नृत्य है।
- **रासनृत्य-** यह नृत्य ब्रज क्षेत्र में रासलीला के दौरान किया जाता है।
- **झूला नृत्य-** यह नृत्य भी ब्रज क्षेत्र में श्रावण मास में मन्दिरों में किया जाता है।

उत्तर प्रदेश के प्रमुख लोकगीत

- **बिरहा-** यह पूर्वांचल की प्रसिद्ध लोकगीत परम्परा है। इसमें नायक द्वारा भोजपुरी भाषा में स्थानीय क्षेत्र में घटी किसी घटना का वृत्तान्त गीत रूप में गाया जाता है।
- **रसिया-** यह ब्रजभूमि की लोकगीत गायन परम्परा है। इसमें भगवान् श्रीकृष्ण की उपासना विभिन्न लोकगीतों के माध्यम से की जाती है।
- **आल्हा-** यह बुन्देलखण्ड क्षेत्र की प्रसिद्ध वीर रस तथा 'आल्हा' के लयबद्ध गायन की प्रसिद्ध शैली है। इस वीर रस कथा में महोबा के आल्हा और ऊदल की वीरता का वर्णन है।
- **कजरी-** अवध क्षेत्र में यह **सावन** के माह में महिलाओं द्वारा गाया जाने वाला लोकगीत है।

उत्तर प्रदेश

- **चैता-** यह एक **ऋतुगीत** है, जो फाल्गुन पूर्णिमा से चैत पूर्णिमा के दौरान गाया जाता है। इस गीत में प्रेम की अनुभूति को व्यक्त किया जाता है
- **पूरन भगत-** इस भक्तिपूर्ण लोकगीत का गायन पश्चिमी उत्तर प्रदेश में किया गया है।
- **भर्तहरि-** यह भी उ.प्र. की लोकगीत परम्परा है।
- **सोहर** - यह एक संस्कार गीत है।
-

मेला/उत्सव	स्थान	मेला/उत्सव	स्थान
परिक्रमा मेला	अयोध्या	झारा देवी मेला	रोहली (कन्नौज)
देवा मेला (देवाशरीफ)	बाराबंकी	पाताल शिवलिंग मेला	नरमऊ (कन्नौज)
कुम्भ मेला	प्रयाग (प्रति 12 वर्ष में)	नैमिषारण्य मेला .	नैमिषारण्य (सीतापुर)
रामायण मेला	चित्रकूट	देवी पाटन मेला	बलरामपुर
बटेश्वर मेला (पशु मेला)	बटेश्वर (आगरा)	गोला गोकरनाथ	लखीमपुर खीरी
आगरा पर्यटन उत्सव	आगरा	खिचड़ी मेला	गोरखपुर
लखनऊ उत्सव	लखनऊ	देवछठ मेला	मथुरा
कम्पिल मेला	बाँदा	माघ मेला	प्रयाग
शाकम्भरी मेला	सहारनपुर	नक कटैया मेला	वाराणसी
गोविन्द साहब मेला	अतरौलिया (आजमगढ़)	रामनगरिया मेला	फर्रुखाबाद (गंगा तट पर)
शुक्राताल मेला	मुजफ्फरनगर	संकिसा	फर्रुखाबाद
सुलहकुल उत्सव	आगरा	ददरी मेला (पशु मेला)	बलिया (कार्तिक पूर्णिमा)
कैलाश मेला	आगरा	सरधना मेला	सरधना (मेरठ)
बाल सुन्दरी देवी मेला	अनूपशहर (बुलन्दशहर)	मुड़िया मेला	वृन्दावन (मथुरा)
परिक्रमा मेला	मिश्रिख और नीमसार (सीतापुर)	श्रृंगीरामपुर मेला	श्रृंगीरामपुर (कन्नौज)
लठमार होली	मथुरा	नवरात्रि मेला	आगरा
गढ़ मुक्तेश्वर मेला	हापुड़	ढाईघाट मेला	शाहजहाँपुर
नौचन्दी मेला	मेरठ	हरिदास मेला	वृन्दावन
सैयद सालार मेला	बहराइच	ददरी पशु मेला	बलिया
मकनपुर मेला	मकनपुर (कन्नौज)	रथयात्रा मेला	वाराणसी

- लखनऊ उत्सव जिसे अब लखनऊ महोत्सव के नाम से जाना जाता हैमे शुरूआत की गयी थी। 76-1975 , प्रत्येक वर्ष इसका आयोजन नवम्बर/दिसम्बर में किया जाता है।
- आयुर्वेद महोत्सव का आयोजन झाँसी मे किया जाता है।
- लोकनृत्य राहुला का सम्बन्ध बुन्देलखण्ड क्षेत्र से है।
- रवाला नृत्य, बढ़इया नृत्य, राई नृत्य जावरा नृत्य, शायरा नृत्य, कार्तिक नृत्य, हरदौला कथा और शौरा नृत्य का सम्बन्ध बुन्देलखण्ड क्षेत्र से है।
- उत्तर प्रदेश मे ढोला व रागिनी लोकगीत का प्रचलन मेरठ-आगरा क्षेत्र मे होता है।
- काम्पिल मेला जैन धर्म से सम्बन्धित है।
- नौचन्दी का मेला प्रतिवर्ष मेरठ मे लगता है इस मेले में हिन्दू व मुस्लिम दोनों की सहभागिता होती है। यह साम्प्रदायिक सौहार्द बढाने एवं भाईचारे को बढ़ाने में विशेष भूमिका निभाता है।
- उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र प्रयागराज में स्थित है।

उत्तर प्रदेश

- उत्तर प्रदेश मे गुरु पूर्णिमा पर्व महर्षि वेदव्यास को समर्पित है।
- यूनेस्को ने कुम्भ मेला को 2017 में मानव की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के रूप मे मान्यता प्रदान की।
- 'बधाई' बुन्देलखण्ड का लोकसंगीत है। पुरूषों एवं महिलाओं द्वारा किया जाने वाला यह नृत्य जन्म और विवाह के मांगलिक अवसर पर शीतला माता की अराधना कि जाती है।
- मिर्जापुर में सोन नदी के तट पर लिखुनिया भलदरियां, लोहरी इत्यादि सौ से अधिक पाषाणकालीन चित्रों से युक्त गुफाएं एवं शिलाश्रय प्राप्त हुए है, जो चॉक (खड़िया) तथा लाल रंग के चित्रों द्वारा निर्मित है ये चित्र लगभग 5000 ई.पू. के माने जाते है।
- महाकुंभ मेले की तिथि खगोलिय रूप से सूर्य, चन्द्रमा और बृहस्पति की स्थित का अध्ययन करने के बाद निर्धारित की जाती है। कुंभ मेला का आयोजन प्रत्येक 12 वर्ष में चार स्थान प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन एवं नासिक में किया जाता है। जबकि अर्धकुंभ का आयोजन प्रत्येक 6 वर्ष में किया जाता है।

18. जनजाति क्षेत्र

- राज्य मे जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बड़ी जनजाति थारू है जबकि सबसे कम जनसंख्या वाली बनरावत है।
- प्रदेश मे सोनभद्र जिले मे सबसे अधिक व सबसे कम बागपत जिले मे जनजाति निवास करती है।

	जनजाति	जनपद
1	गोंड, धुरिया, नायक, ओझा, पठारी, राज गोंड	महाराजगंज, सिद्धार्थनगर, बस्ती, गोरखपुर, देवरिया, आजमगढ़, वाराणसी, मिर्जापुर, सोनभद्र, गाजीपुर एवं चन्दौली देवरिया, बलिया, गाजीपुर, सोनभद्र, मऊ एवं वाराणसी
2	खरवार/खेरवार	सोनभद्र
3	परहरिया	ललितपुर
4	सहरिया	मिर्जापुर, सोनभद्र
5	पंखा, पनिका	सोनभद्र
6	बैगा	सोनभद्र
7	अगरिया	सोनभद्र
8	भुइया, भुनिया	सोनभद्र, चन्दौली
9	चेरो	सोनभद्र
10	पठारी	महाराजगंज, बलरामपुर,
11	थारू	लखीमपुर खीरी, श्रावस्ती,
12	बुक्सा	बहराइच

- **थारू जनजाति** - थारू जनजाति के किरात वंशीय लोग प्रदेश के तराई क्षेत्र के सिद्धार्थनगर, महाराजगंज, श्रावस्ती, बहराइच व लखीमपुर खीरी जिलों के उत्तरी भागों में निवास करते हैं। इनकी अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान है। थारू नाम की उत्पत्ति राजपूताना के 'थार' मरुस्थल से आकर यहाँ बस जाने से हुई है। थारू जनजाति में संयुक्त परिवार प्रथा प्रचलित है। परिवार का वृद्ध व्यक्ति ही सम्पूर्ण परिवार का मुखिया होता है।
- थारूओं में विधवा विवाह की भी प्रथा प्रचलित है। इस प्रकार के विवाह में भोज दिया जाता है जिसको लठभरवा कहते हैं। थारूओं में अदला-बदली विवाह भी प्रचलित है। थारू दीपावली त्योहार को शोक पर्व के रूप में मनाते हैं। क्योंकि कीट को अपना पूर्वज मानते है और कीट दीपक से जल जाते है।
- थारू जनजाति के लड़के-लड़कियों के लिए लखीमपुर खीरी जनपद में एक महाविद्यालय स्थापित किया गया है। जहाँ पर बड़ी संख्या में ये शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। 2 अक्टूबर, 1980 को उ.प्र. में थारू विकास परियोजना शुरू की गई।
- **बुक्सा जनजाति** - बुक्सा जनजाति प्रदेश के बिजनौर जिले के छोटी-छोटी ग्रामीण बस्तियों में निवास करती है और यह राजपूताना घरानों से सम्बन्ध रखती है।
- इनमें हिन्दू समाज के समान ही अनुलोम तथा प्रतिलोम विवाह भी प्रचलित हैं। साथ ही अन्तर्जातीय विवाह भी होते हैं। इनमें बहुपत्नी विवाह तथा विधवा विवाह प्रचलित है। बुक्सा जनजाति के लोग चामुण्डा देवी की पूजा करते हैं। बुक्सा जनजाति का सर्वोच्च व्यक्ति तखत कहलाता है। बुक्सा जनजाति का मुख्य व्यवसाय कृषि है तथा इनके विकास के लिए 1983-84 में बुक्सा जनजाति परियोजना शुरू की गई।

उत्तर प्रदेश

- **खरवार जनजाति -** उत्तर प्रदेश के गाजीपुर, बलिया, चन्दौली, देवरिया, मिर्जापुर, बांदा के पाठा क्षेत्र और सोनभद्र जिलों में खरवार जनजाति निवास करती है। खरवार जनजाति की प्रमुख उपजातियाँ- सूरजवंशी, पतबन्दी, दौलतबन्दी, खेरी, राऊत, मौगती, गोजू, मोझायाली और आर्मिया हैं। इस जाति का प्रमुख लोकनृत्य **करमा** है।
- खरवार जनजाति के प्रमुख देवता-बघउस, वनसन्ती दूल्हादेव, घमसान, शिव, दुर्गा, गोरड्या, हनुमान आदि देवताओं के अतिरिक्त वृक्षों में सेमल, पीपल, नीम तथा जन्तुओं में नाग, बिच्छू आदि की पूजा की जाती है।

- **माहीगीर जनजाति-** माहीगीर जनजाति उत्तर प्रदेश के **बिजनौर जिले** के नजीबाबाद क्षेत्र में निवास करती है। इस जनजाति के लोग इस्लाम धर्म के अनुयायी हैं। इस जनजाति के लोगों का मुख्य व्यवसाय मछली पकड़न है। महाभारत में माहीगीर जनजाति का उल्लेख मिलता है।

- **जौनसारी जनजाति - यह मुख्यत: उत्तराखण्ड की जनजाति है, इसमे बहुविवाह प्रचलित है।**

19. आर्थिक तत्व

- सर्वाधिक रोजगार वाला जिला गौतमबुद्ध नगर है।
- कारपेट बाजार की स्थापना भदोही मे की जा रही है।
- उत्तर प्रदेश राज्य मे 2022 मे कुल 31 विशेष आर्थिक क्षेत्र है।
- राष्ट्रीय चैम्बर ऑफ उद्योग एवं वाणिज्य की स्थापना 1949 को आगरा मे की गई थी।
- भारत एवं उत्तर प्रदेश की पहली चीनी मिल 1903 मे प्रतापपुर (देवारिया) मे स्थापित की गयी थी।
- सीमेण्ट कारखाने - कजराहट व चुनार (मिर्जापुर), चुर्क व डल्ला (सोनभद्र), रायबरेली, गौरीगंज व जगदीशपुर (अमेठी), कासगंज, झांसी, टांडा (अयोध्या), सिकन्दराबाद (बुलन्दशहर) व अलीगढ़ मे स्थित है।
- डीजल लोकोमोटिव मडुआडीह, वाराणसी मे स्थित है।
- कृत्रिम अंग निर्माण लिमिटिड कानपुर मे स्थित है।
- हिन्दुस्तान एल्युमिनियम कारपोरेशन रेनकूट, सोनभद्र मे स्थित है।
- ट्रांसफार्मर कारखाना झांसी व मेरठ मे स्थित है।
- तेल शोधक कारखाना मथुरा मे स्थित है।
- यूरिया उर्वरक कारखाना (इफ्को) फूलपुर, इलाहाबाद व आंवला, बरेली में स्थित है।
- यूरिया उर्वरक कारखाना (शक्तिमान) जगदीशपुर, अमेठी में स्थित है।
- अफीम कारखाना (ओपियम फैक्ट्री) गाजीपुर मे स्थित है।
- कृत्रिम रबड़ कारखाना मोदीनगर, बरेली मे स्थित है। (वर्तमान मे बन्द)
- कागज लुग्दी उद्योग सहारनपुर मे स्थित है।
- हस्त निर्मित कागज उद्योग मथुरा, जालौन में विस्तारित है।
- उत्तर प्रदेश मे निर्यातोन्मुख सॉफ्टवेयर पार्क नोएडा और कानपुर व लखनऊ मे स्थित है।
- उत्तर प्रदेश में वित्तीय निगम की स्थापना 1 नवम्बर, 1954 को की गयी।
- भारतीय कृत्रिम अंग निर्माण निगम (ALIMCO) की कानपुर मे 1972 मे की गयी।
- उत्तर प्रदेश का राज्य चर्म विकास एवं विपणन निगम लि0 आगरा में स्थित है।
- महावीर जूट मिल्स लिमिटेड एक मात्र जूट मिल सहजनवा (गोरखपुर) में स्थित है।
- व्यापार सुविधा केन्द्र एवं क्राफ्ट म्यूजियम वाराणसी में स्थित है।
- उत्तर प्रदेश का सबसे बड़ा आभूषण बाजार मथुरा में स्थित है।
- इत्र व सुगन्धित तेल उद्योग - कन्नौज, गाजीपुर, जौनपुर, लखनऊ, इलाहाबाद
- कालीन उद्योग - भदोही, मिर्जापुर, आगरा, वाराणसी, कानपुर, जालौन
- ब्लैक पॉटरी - आजमगढ़
- काले मिट्टी के बर्तन - निजामाबाद
- पीतल मूर्ति व घंटी - मथुरा, एटा, सहारनपुर
- पीतल पात्र उद्योग - मुरादाबाद, वाराणसी
- कैंची उद्योग - मेरठ
- ताला उद्योग - अलीगढ़
- चाकू उद्योग - रामपुर
- सूरमा उद्योग - बरेली
- बीड़ी उद्योग - मिर्जापुर, सोनभद्र, भदोही, चित्रकूट, बांदा
- टेरीकोटी उद्योग - गोरखपुर

उत्तर प्रदेश

- चिकन, जरी, जरदोजी उद्योग - लखनऊ, रामपुर, बाराबंकी, बरेली, फर्रूखाबाद
- लकड़ी नक्काशी उद्योग - वाराणसी, लखनऊ, चित्रकूट, फतेहपुर
- पत्थर के खिलौने - चित्रकूट
- खेल का समान - मेरठ, आगरा, बरेली
- पेठा उद्योग - आगरा, इलाहाबाद
- गजक व रेवड़ी उद्योग - लखनऊ
- हाथ छपाई - फर्रूखाबाद
- प्रमुख निर्यात विकास केन्द्र -
  1. आगरा - सिल्क कारपेट, हस्तशिल्प सामान, संगमरमर उत्पाद, बैग
  2. खुर्जा - पॉटरी, सेरामिक टाइल्स
  3. मेरठ - टेक्सटाइल्स, खेल का सामान, स्वर्ण आभूषण
  4.

PA.ONE SIR
+91-90-2696-9090
pa.onesingham@gmail.com